सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 351, नई दिल्ली । गुरुवार, 27 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 महाशिवरात्रि पर यमुना प्रेमियों ने खेली यमुना संग फूलों की होली

06 इंटरनेट हिन्दी के लिए भविष्य का सर्वाधिक सक्रिय मीडिया

08 दुनिया अपनी चाल से चलती है, सलाह की कोई कीमत नहीं!

डीटीसी पर 60 हजार करोड़ का कर्जा, नई सरकार के लिए किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं महिला फ्री बस सेवा

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम पर 60 हजार करोड़ का कर्ज नवगठित रेखा सरकार के लिए बड़ी चुनौती बन रह है। प्रतिदिन भी निगम में घाटा बढ़ रहा है।

इस आर्थिक संकट में महिलाओं की फ्री बस सेवा सरकार के लिए अग्निपरीक्षा से कम नही है। पिछली आप सरकार निगम का यह 60 हजार करोड़ का घाटा वर्तमान रेखा सरकार को उपहार में दे गई है।

दूसरे शब्दों में कहें तो आप की सरकार अपने दोनों ही कार्यकाल में पर्याप्त बसें खरीदने में विफल रही है। 2015 से 2020 के कार्यकाल में यह सरकार एक बस भी नहीं खरीद सकी थी। कैग रिपोर्ट ने पूर्व की आप सरकार की नाकामी और लापरवाही को उजागर कर दिया है। कैग ने इस बात से पर्दा उठा दिया है कि किस तरह से सरकार की लापरवाही के चलते डीटीसी का घाटा बढ़ता जा रहा है।

घाटा 35 हजार करोड़ से ऊपर पहुंच गया

रिपोर्ट के अनुसार रूट निर्धारण में गड़बड़ी के कारण दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) को भारी नुकसान। तीन वर्षों में दिल्ली परिवहन निगम का घाटा 35 हजार करोड़ से ऊपर पहुंच गया। वर्ष 2012 के दिल्ली सरकार के मानक के अनुसार, 5500 बसों की जरूरत थी। इसकी तुलना में लगभग चार हजार बसें चलती हैं।

2015-16 के 25,300 करोड़ रुपये से बढ़कर 2021-22 में लगभग 60,750 करोड़ हो गया है। नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि यह घाटा इसलिए भी बढ़ गया है कि 45% बसें ओवरएज हैं और बड़े स्तर पर खराब रहती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप बेड़े का उपयोग औसत से कम है। लेखा परीक्षक ने कई खामियों की ओर इशारा किया है, जिसमें परिवहन उपयोगिता की अपने बेड़े को बढ़ाने में असमर्थता भी शामिल है।

एक रिपोर्ट डीटीसी बसों से भी जुड़ी

दिल्ली विधानसभा में कैग की 14 जो रिपोर्ट पेश की जाएंगी। इसमें एक रिपोर्ट डीटीसी बसों से भी जुड़ी है। यह रिपोर्ट भी

उन रिपोर्ट में शामिल है, जिसे आप सरकार ने विधानसभा में रखने से इनकार कर दिया था। 2009 से डीटीसी बसों के किराये में कोई बदलाव नहीं हुआ है। महिलाओं को फ्री बस सेवा योजना शुरू करने से बोझ और बढ़ गया है। कैग ने बताया कि डीटीसी को घाटे से निकालने के लिए किसी ठोस योजना की जरूरत है।

डीटीसी के पास होना चाहिए 11 हजार बसों का बेड़ा

2007 में दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा था कि डीटीसी के पास 11 हजार बसों का बेड़ा होना चाहिए। पांच साल बाद दिल्ली कैबिनेट ने तय किया कि दिल्ली में 5500 बसें होंगी। कैग रिपोर्ट के अनुसार, मार्च 2022 के अंत में डीटीसी के पास 3937 बसों का बेड़ा था। जिसमें से 1770 यानी करीब 45 प्रतिशत बसें कबाड़ हो चुकी हैं। जबकि लो फ्लोर बसें 10 साल से अधिक पुरानी थीं, उन्हें अगले महीने के लास्ट तक हटाया जाना था।

300 नई बसों की खरीद की

आप सरकार ने 2022 में 300 नई बसों की खरीद की, लेकिन इसके बावजूद 1740 बसों की कमी थी। कैग की रिपोर्ट में खुलासा किया गया है कि फेम-1 योजना के तहत मिले 49 करोड़ रुपये का लाभ भी आप सरकार ने नहीं उठाया। फेम-2 के तहत इलेक्ट्रिक बसों की अनुबंध की अवधि 12 वर्ष से घटाकर 10 वर्ष कर दी गई।

रूटों को लेकर भी कई कमियां

इसके अलावा कैग ने रूटों को लेकर भी कई कमियां उजागर कीं। रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली के 468 मार्गों पर बसों का संचालन किया जा रहा है। किसी भी मार्ग पर चलने वाली बस अपना उस रूट का खर्च वसुलने में भी नाकाम रही है। इस कारण 2015 से लेकर 2022 तक डीटीसी को 14 हजार 199 करोड़ रुपये का घाटा हुआ।

बता दें कि डीटीसी की टूटी बसें बदलने के लिए 2015 में अरविंद केजरीवाल ने 10 हजार नई बसें खरीदने का एलान किया था। मगर आप सरकार ऐसा नहीं कर सकी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सीडीआरएम ने देश के ड्राइवर्स को "लॉयल्टी, एक्सीडेंट फ्री और पंक्चुअलिटी अवार्ड से" सम्मानित

संजय बाटला

नई दिल्ली। सेंट्रल फॉर ड्राईवर रिलेशनशिप मैनेजमेंट (सीडीआरएम) द्वारा 24 फरवरी को देश के विभिन्न विभिन्न कोनों के ट्रक ड्राइवर्स को लॉयल्टी अवॉर्ड, एक्सीडेंट फ्री अवार्ड, पंक्चुअलिटी अवार्ड जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस अवसर पर एआईएमटीसी के अध्यक्ष डॉ हरीश सभरवाल मुख्य अतिथि थे। इस समारोह में मुख्य अतिथि के साथ रमेश फाउंडर सीडीआरएम, शिवशैलम आई ए एस विशेष सचिव (लाजिस्टिक्स), प्रो. डॉ जी रघुराम एक्स डायरेक्टर आईआईएम बंगलोर, रामा शंकर पांडे सीईओ टाटा बैट्रीज तथा हरगोबिंद पृथी ने लाइटनिंग ऑफ लैंप से इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस मौके पर डॉ हरीश सभरवाल ने समाज में ड्राइवर्स की जिम्मेदारी एवं समाज में उनके स्थान तथा योगदान के विषय में कई तथ्य रखे, तथा आश्वासन दिया कि एआईएमटीसी सदैव देश के ड्राइवर्स के साथ है व केंद्र तथा राज्य सरकार से भी सभी ड्राइवर्स के हित में फ्री इंश्योरेंस, फैमिली मेडिक्लेम, पीएम आवास योजना व ईएसआई जैसी सुविधाएं प्रदान करवाने के लिए पूरा प्रयास करेंगे।

सदर में जाम ट्रैफिक पुलिस नदारत

व्यापारियों को सड़क पर उतरने के लिए मजबूर कर रही है ट्रैफिक पुलिस - पम्मा व यादव

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन के चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने कहा सदर बाजार ट्रैफिक जाम को लेकर आए दिन व्यापारी और खरीददारों काफी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। जिसको लेकर व्यापारियों में काफी रोष है क्योंकि आने वाले समय में त्योहारों का दिन है। होली करीब आ रही है और जाम की समस्या बढ़ती जा रही है।

परमजीत सिंह पम्मा व राकेश यादव ने बताया पहले भी इसको लेकर व्यापारियों ने पहले भी विरोध जताया था और ट्रैफिक अधिकारियों के साथ बैठक में यह तय हुआ था सदर बाजार से जुड़े सभी चौक पर ट्रैफिक के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। जो ट्रैफिक जाम को खुलवाने के लिए कार्य करेंगे मगर काफी समय से कोई भी ट्रैफिक अधिकारी चौक पर नहीं नजर आता। जिसके कारण घंटों जाम की स्थिति बनी रहती है। जबकि सदर थाना, 12 टूटी, कुतुब रोड तेलीवाड़ा, मिठाई पुल सहित अन्य चौक पर सुबह शाम ट्रैफिक पुलिस अधिकारी तैनात होने का तय हुआ था मगर पुलिस अधिकारी हर चौक से नदारत रहते हैं अगर कहीं पर दिखते भी हैं तो वह सिर्फ लोगों को तंग करने के लिए या चालान करने के लिए ही वहां खड़े होते हैं। और ट्रैफिक पुलिस की क्रेन जरा सा कोई अपना टू व्हीलर खड़ा करता है तो उसको फटाफट उठाकर ले जाती है। मगर ट्रैफिक खुलवाने के लिए कोई कार्य नहीं करती।

पम्मा व यादव ने बताया दूसरी तरफ सदर बाजार थाने से लेकर 12 टूटी चौक नगर निगम द्वारा पार्किंग दी गई है वह तीन-तीन लाइन सड़क पर पार्किंग कर देते हैं जिससे वहां पर भी आए दिन ट्रैफिक जाम रहता है। जिसमें इमरजेंसी वहां को भी आने-जाने में काफी दिक्कत होती है इससे कोई बड़ा हादसा हो सकता है।

बढ़ती आबादी के बीच बढ़ती पार्किंग समस्याएं !

भारत आज विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राष्ट्र है।बढ़ती जनसंख्या और देश में बढ़ते वाहनों के साथ ही आज देश के बड़े शहरों में पार्किंग की समस्या एक बहुत बड़ी और ज्वलंत समस्या है। कहना ग़लत नहीं होगा कि जैसे-जैसे हमारे यहां शहरी आबादी बढ़ी है और देश के शहरों की अर्थव्यवस्था का व्यापक तौर पर विस्तार हुआ है, शहरी क्षेत्रों में मोटर वाहनों, मुख्य रूप से कारों और दोपहिया वाहनों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। वास्तव में, कहना चाहूंगा कि आज तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण और बढ़ते वाहनों की संख्या ने पार्किंग की समस्या को जन्म दिया है। बढ़ती आबादी, बेतरतीब विकास ने शहरों में मार्गों को अतिव्यस्त बना दिया है, जिससे यातायात बाधित होना, हर कहीं पर जाम लगना आम बात सी हो गई है।सच तो यह है कि जैसे-जैसे यातायात की भीड़ बढ़ती है, तो शहरों में गतिशीलता में बाधा आती है, और यात्रियों को अपने रोज़मर्रा के आवागमन पर और ज़्यादा समय गुज़ारना पड़ता है।शहरों में आज जगह-जगह अतिक्रमण भी देखने को मिलता है। बाजार हो या गलियां हर कहीं ठीक-ठाक भीड़भाड़ रहती है। यही कारण है कि शहरों में आए दिन वाहनों की पार्किंग के लिए बहुत अधिक मारामारी होती है व ट्रैफिक जाम लगता है। शहरों में पार्किंग का प्रबंधन ठीक नहीं होने से आम जनता को बहुत सी समस्याओं और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ट्रैफिक पुलिस और नगर निगम प्रशासन, हालांकि शहरों में पार्किंग व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के लिए समय-समय पर प्रयास करते हैं, लेकिन बावजूद इसके भी आज शहरों में पार्किंग व्यवस्था बेहतर बनाने के लिए पार्किंग की विशेष कार्ययोजनाएं बनाये जाने की आवश्यकताएं हैं। पुराने बसे शहरों में नगर-नियोजन सही नहीं देखने को मिलता, क्यों कि वहां गलियां संकरी होती हैं, और स्थान विशेष का भी काफी अभाव होता है, ऐसे में इन शहरों में पार्किंग व्यवस्था को बेहतर बनाना एक चुनौती ही है। आज लोग किसी कार्य विशेष के लिए रोजाना इधर से उधर, बाजार में, आफिस में जाते हैं, जगह नहीं मिलने के कारण वे अपने वाहनों को इधर उधर कहीं भी, जहां उनको जगह मिलती है, सड़कों के किनारे या अन्य स्थानों पर अव्यवस्थित तरीके से खड़ा कर देते हैं और इससे शहरों में जाम की समस्या जन्म लेती है। वास्तव में, आज जरूरत इस बात की है कि पार्किंग के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाई जाए। वास्तव में, होना तो यह चाहिए कि नई पार्किंग नीतियां बनाकर सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने के लिए आम लोगों को प्रेरित करना चाहिए। आज यातायात की भीड़ जहां एक ओर ट्रैफिक को धीमा करके आम आदमी की परेशानियों का सबब बनतीं हैं, वहीं दूसरी ओर अधिक ट्रैफिक से हमारे स्वास्थ्य को तो अलाभ(नुकसान) पहुंचते ही हैं, साथ ही साथ इससे हमारे पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र पर भी बहुत असर पड़ता है तथा आर्थिक रूप से भी हमें हानि होती है।कुल मिलाकर, यह बात कही जा सकती है कि यातायात की भीड़ हमारी सामाजिक पूंजी(सोशल कैपिटल) को भी नष्ट कर देती है। इसलिए, पार्किंग के लिए सही मूल्य तय किए जाने की आवश्यकता महत्ती है, ताकि हमारी सामाजिक पूंजी नष्ट होने से बचाई जा सके और साथ ही साथ हमारे स्वास्थ्य के साथ ही धरती के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखा जा सके। आज भारत में स्थिति यह है

हर कोई कहीं भी अपने वाहनों को खड़ा कर देते हैं, बिना इस बात की परवाह किए किए इससे आम आदमी को परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आज हमारे यहां सड़कों पर 'जित देखो तित' वाहन ही वाहन बेतरतीब खड़े नजर आते हैं, दरअसल इसके पीछे जो कारण है वह है-पार्किंग का मुफ्त होना। जब पार्किंग मुफ्त होती है तो लोग उसका नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं और कहना ग़लत नहीं होगा कि इसके चलते हमें गंभीर आर्थिक और पर्यावरणीय कीमतें चुकानी पड़ती हैं। इससे स्थानीय निकायों को घाटा भी होता है। पार्किंग शुल्क का इस्तेमाल स्थानीय निकायों द्वारा विकास कार्यों,आम लोगों को किसी सुविधा विशेष(यथा बेहतर फुटपाथ, कचरा निकासी, शौचालय,बस स्टॉप और स्ट्रीट लाइट के रूप में) को उपलब्ध करवाने के लिए भी किया जा सकता है, लोगों को यह समझना चाहिए। आज भारत जैसे देश में बहुत कम शहरों ने सशुल्क पार्किंग नीति को लागू किया गया है। विश्व के बड़े और विकसित देशों में आज ऐसी व्यवस्थाएं हैं जहां सशुल्क पार्किंग व्यवस्थाएं हैं। यह ठीक है कि सशुल्क पार्किंग को विरोध का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि इससे ऊर्जा की खपत, वायु प्रदूषण और कार्बन उत्सर्जन कम होने से फायदे भी होंगे। कहना चाहूंगा कि पार्किंग शुल्क से प्राप्त राजस्व का उपयोग सार्वजनिक परिवहन को बेहतर बनाने और सब्सिडी देने के लिए के लिए किया जा सकता है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज ऑफ़-स्ट्रीट पार्किंग का सबसे बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जाना चाहिए और ऑन-स्ट्रीट पार्किंग को युक्तिसंगत और बेहतरीन बनाया जाना चाहिए (यातायात प्रवाह को आगे बढ़ाने के लिए इसे प्रतिबंधित और व्यवस्थित किया जाना चाहिए) ताकि चलते हुए यातायात के लिए सड़क पर अधिक स्थान उपलब्ध हो सके। आज बहुत से लोगों का यह मानना है कि सार्वजनिक स्थानों में पार्किंग मुफ़्त नहीं होनी चाहिए और वहां पार्किंग शुल्क लिया जाना चाहिए, ताकि ऐसे स्थानों पर पार्किंग अव्यवस्थाओं से बचा जा सके।हालांकि, यह भी एक तथ्य है कि भारत में केवल पार्किंग सुधारने से ही आम आदमी को राहत नहीं मिलेगी। हम भारत के बुनियादी ढांचे की कमी को पूरा करने के लिए सड़कों का चौड़ीकरण कर सकते हैं, ज्यादा फ्लाईओवर बना सकते हैं, क्यों कि बढ़ते शहरीकरण, विकास, पारिवारिक जरूरतों के कारण आने वाले समय में वाहनों का ट्रैफिक लगातार बढ़ते जाने की ही संभावनाएं हैं। पार्किंग अव्यवस्थाओं से बचने के लिए आज जरूरत इस बात की है कि लोग साइकिल से या पैदल यात्रा ज्यादा करें। चीन और जापान जैसे देशों में लोग पैदल चलना और साइकिल यात्रा करना पसंद करते हैं, यह अच्छी बात है। पार्किंग अव्यवस्थाओं से बचने हेतु आज

मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण किया जा सकता है। आज का युग सूचना क्रांति का युग है, ऐसे में पार्किंग ऐप्स और स्मार्ट पार्किंग सिस्टम का उपयोग कर भी पार्किंग की सुविधाएं बढ़ाई जा सकती हैं जिससे लोगों को अपनी गाड़ियों को पार्क करने में आसानी हो। आज शहरों में विभिन्न कॉम्प्लेक्स, बाजारों में दुकानों के आसपास वाहनों की पार्किंग का बेजा उपयोग किया जाता है, जिसे ट्रैफिक पुलिस व नगर निगम की संयुक्त टीम के सहयोग से खाली कराकर, वहां वाहनों की पार्किंग करवाई जानी चाहिए।पार्किंग वाले स्थानों पर सीसीटीवी टीवी कैमरे लगाए जाने चाहिए और इसे ट्रैफिक पुलिस के कार्यालय से जोड़ा जाना चाहिए, जिससे पल-पल की गतिविधियां/सूचनाएं ट्रैफिक पुलिस कार्यालय को मिल सकें और ट्रैफिक अधिकारी तत्काल इन पर सख्त कार्रवाई कर सकें। इतना ही नहीं, शहरों में पार्किंग स्थलों की व्यवस्था बाज़ारों, भीड़-भाड़ के स्थानों से समुचित दूरी पर की जानी चाहिए, ताकि आम आदमी को किसी प्रकार की कोई परेशानी न होने पाए। इसके अलावा,शहरों में मल्टीलेवल पार्किंग की व्यवस्था न्यूनतम शुल्क पर की जा सकती है। कभी भी बेतरतीब ढंग से पार्किंग नहीं की जानी चाहिए। नागरिकों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जन-जागरण अभियान चलाए जा सकते हैं। बाजार, ऑफिस, रिहायशी इलाकों में बहुस्तरीय पार्किंग बनवानी चाहिए। मेट्रो से यात्रा करने अथवा सार्वजनिक परिवहन से यात्रा को बढ़ावा देने की जरूरत है, ताकि निजी वाहनों की संख्या कम हो सके। आज सड़कों पर केवल ड्राइवर, बिना किसी सवारी के खाली गाड़ियों के साथ दौड़ते हैं। दिल्ली जैसे शहरों में यह नजारा आसानी से देखा जा सकता है, जहां एक ही परिवार के चार पांच लोग एक ही रूट पर जाने के लिए अलग-अलग गाड़ियों का इस्तेमाल करते हैं, इससे सड़कों पर ट्रैफिक बढ़ता है और पार्किंग की भी समस्या जन्म लेती है।इसके अलावा, पार्किंग अव्यवस्थाओं से बचने के लिए बड़े/मेट्रो सीटीज में बहुस्तरीय पार्किंग परिसर और अंडरग्राउंड पार्किंग का निर्माण भी करवाया जा सकता है। मॉल, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड व शहर में विभिन्न सार्वजनिक स्थलों के आसपास बहुस्तरीय पार्किंग विकसित की जा सकती है। पार्किंग समस्या से बचने के लिए स्थानीय निकायों और ट्रैफिक पुलिस के बीच समन्वय स्थापित करना भी आज बहुत ही जरूरी है। पार्किंग अव्यवस्थाओं से निपटने के लिए शहरों में पार्किंग मैनेजमेंट कमेटी का भी निर्माण किया जा सकता है, जो बनाए गए नियम-नीतियों को प्रभावी तरीके व सख्ती से लागू करें। इसके अलावा, अवैध पार्किंग पर भी नियंत्रण स्थापित किया जाना चाहिए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

सफलता प्राप्ति हेतु नक्षत्रों की संज्ञाओं के आधार पर करें सभी कार्य....

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नक्षत्रों को संज्ञाओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है जैसे कि ध्रुव संज्ञक नक्षत्र, चर संज्ञक नक्षत्र, उग्र नक्षत्र, मिश्र नक्षत्र या स्थिर संज्ञक नक्षत्र, क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र, मृदु संज्ञक नक्षत्र आदि। किस नक्षत्र पर कौनसा विशेष कार्य करना शुभ होता है इसका निर्धारण इन्ही संज्ञाओं के आधार पर किया जाता है।

ध्रुव संज्ञक नक्षत्र: रोहिणी, उत्तरा फलगुनी, उत्तराषाढ़, उतरा भाद्रप्रद यह चार नक्षत्र ध्रुव या स्थिर संज्ञक नक्षत्र है इन नक्षत्रों में स्थिर कार्य जैसे कि रूद्राभिषेक, ग्रह प्रवेश, व्यापार आरंभ, बीज बोना, ग्रह शांति ,विधा आरंभ, नए वस्त्र ,आभूषण खरीदना मित्रता आदि कार्य करना शुभ होता है।

चर संज्ञक नक्षत्र: स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, घनिष्ठा और शतभिषा यह पांच नक्षत्र चर संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इनमे सवारी करना, मंत्र सिद्धि, हल जोतना, हाथी, घोड़ा, कार आदि की सवारी करना , दुकान खोलना, वस्तु की बिक्री करना, बागवानी आदि कार्य किए जा सकते हैं।

उग्र संज्ञक नक्षत्र: पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वा भाद्रपद, भरणी और मघा इन पांच नक्षत्रों को उग्र या क्रूर संज्ञक नक्षत्र कहते हैं। इनमें उग्र कार्य जैसे कि तांत्रिक प्रयोग, मुकदमा दायर करना, शत्रुता, शस्त्र प्रयोग, अग्नि दहन, बलि देना आदि कार्य किए जाते हैं।

मिश्र नक्षत्र: विशाखा और कृतिका यह दो नक्षत्र मिश्र संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इसमें अग्निहोत्र, यज्ञ हवन ,बंधन प्रयोग करना आदि कार्य होते हैं।

क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र: अश्वनी, हस्त, पुष्य, अभिजीत ये 4 नक्षत्र क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र है। इनमे खरीद बेंच ,मंगल यात्रा, स्त्री रति, विधाआरंभ, संगीत सीखना, औषधि प्रयोग आदि कार्य किए जा सकते हैं।

मृदु नक्षत्र: मृगशिरा, चित्रा ,अनुराधा व रेवती यह चार नक्षत्र मैत्री या मृदु संज्ञक नक्षत्र हैं। इनमे मित्रता करना, संगीत सीखना, स्त्री रमण, नवीन वस्त्र धारण करना ,अलंकार धारण करना आदि कार्य किए जाते हैं।

तीक्ष्ण नक्षत्र : मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और अश्लेषा यह चार नक्षत्र तीक्ष्ण या दारुण नक्षत्र कहलाते हैं इनमे उग्र कार्य, प्रहार करना, पशु प्रशिक्षण मुकदमा दायर करना, मारण, मोहन तथा उच्चाटन आदि कार्य किए जाते हैं।

अधोमुख संज्ञक नक्षत्र : मूल, अश्लेषा, कृतिका विशाखा, तीनों पूर्वा, भरणी, मघा यह सब अधोमुख संज्ञक नक्षत्र हैं। इनमे कुआं खोदना, बोरिंग करवाना, नीव खोदना, ज्योतिष सीखना, तृण संचय करना, नदी में छलांग लगाना, पहाड़ से उतरना ,सुरंग निर्माण आदि कार्य किए जाते हैं।

ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र: आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उतरा तथा रोहिणी यह नौ नक्षत्र ऊर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं।

इनमे नौकरी शुरू करना, बड़े पद पर बैठना, मंदिर निर्माण आरंभ, शपथ ग्रहण, राजतिलक आदि कार्य करना शुभ होता है।

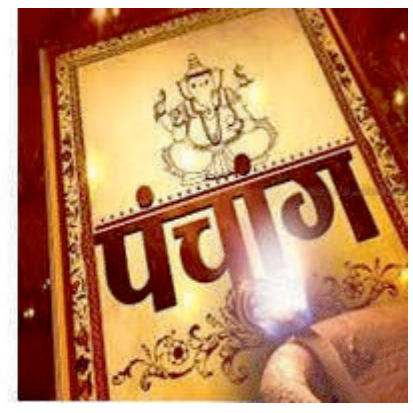

त्रियकमुख संज्ञक नक्षत्र: मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्वनी यह सारे नक्षत्र त्रियक मुख संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इसमें पशु खरीदना, हल चलाना, वायुयान सवारी करना, जल यात्रा आदि करना शुभ माना गया है।

महामृत्युंजय हवनः श्रद्धा, संस्कार और सामूहिक आस्था का प्रतीक

संस्कारशाला द्वारा महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर श्रीकृष्ण नवग्रह मंदिर, सेक्टर 31, फरीदाबाद में एक भव्य महामृत्युंजय हवन का आयोजन किया गया। इस शुभ अनुष्ठान में श्रद्धालुओं ने अपने परिवार सहित भाग लिया और भगवान शिव की कृपा प्राप्त करने हेतु आहुतियाँ अर्पित कीं।

महामृत्युंजय मंत्र और इसका महत्व

महामृत्युंजय मंत्र को सबसे प्रभावशाली और कल्याणकारी मंत्रों में गिना जाता है। यह भगवान शिव को समर्पित है और जीवन में सुख-समृद्धि, आरोग्य और दीर्घायु प्रदान करने वाला माना जाता है। माना जाता है कि इस मंत्र के जाप से न केवल नकारात्मक ऊर्जाएँ समाप्त होती हैं, बल्कि मानसिक शांति भी प्राप्त होती है। इस हवन का उद्देश्य समाज में सकारात्मकता और आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ावा देना था।

बच्चों की भागीदारी: संस्कारों की सीख

इस हवन में विशेष रूप से छोटे बच्चों और परिवारों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, मंत्रोच्चारण किया और हवन की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं था, बल्कि एक संस्कारशाला थी, जहाँ बच्चों को भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं से जोड़ने का प्रयास किया गया। ऐसे आयोजनों से बच्चे अपने धार्मिक मूल्यों और संस्कृति से जुड़ते हैं, जिससे उनमें नैतिकता, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा का विकास होता है।

सामूहिक हवन का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक लाभ

हवन के दौरान अग्नि में दी गई आहुतियाँ वातावरण को शुद्ध करती हैं और मानसिक तनाव को कम करने में सहायक होती हैं। आयुर्वेद में भी हवन सामग्रियों के धुएँ को स्वास्थ्यवर्धक माना गया है। इसके अलावा, सामूहिक रूप से किया गया यह अनुष्ठान समाज में एकता, प्रेम और सहयोग की भावना को भी मजबूत करता है।

संस्कारों की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक ऐसे आयोजन

आज की व्यस्त जीवनशैली में लोग आध्यात्मिक आयोजनों से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में महामृत्युंजय हवन जैसे धार्मिक अनुष्ठान समाज में सकारात्मकता लाते हैं और नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य करते हैं। संस्कारशाला का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि बच्चे और परिवार अपनी संस्कृति को आत्मसात करें और आत्मिक शांति प्राप्त करें।

इस भव्य आयोजन के माध्यम से श्रीकृष्ण नवग्रह मंदिर, फरीदाबाद ने समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास किया। ऐसे आयोजन केवल ईश्वर की आराधना तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे संस्कार, आध्यात्मिक जागरूकता और सामाजिक समरसता को भी बढ़ावा देते हैं।

।। जय श्री महाकाल ।।

ॐ महाकाल महाकाय महाकाल जगत्पते ।
महाकाल महायोगिन् महाकाल नमोऽस्तु ते ॥ 1॥

महाकाल महादेव महाकाल महाप्रभो ।
महाकाल महारुद्र महाकाल नमोऽस्तु ते ॥ 2॥

महाकाल महाज्ञान महाकाल तमोऽपहन् ।
महाकाल महाकाल महाकाल नमोऽस्तु ते ॥ *॥

भवाय च नमस्तुभ्यं शर्वाय च नमो नमः ।
रुद्राय च नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः ॥ 4॥

उग्राय च नमस्तुभ्यं महादेवाय वै नमः ।
भीमाय च नमस्तुभ्यं ईशानाय नमो नमः ॥ 5॥

ईश्वराय नमस्तुभ्यं तत्पुरुषाय वै नमः ॥ 6॥

सद्योजात नमस्तुभ्यं शुक्लवर्ण नमो नमः ।
अघः कालाग्निरुद्राय रुद्ररूपाय वै नमः ॥ 7॥

स्थित्युत्पत्तिलयानां च हेतुरूपाय वै नमः ।
परमेश्वररूपस्त्वं नील एवं नमोऽस्तु ते ॥ 8॥

पवनाय नमस्तुभ्यं हुताशन नमोऽस्तु ते ।
सोमरूप नमस्तुभ्यं सूर्यरूप नमोऽस्तु ते ॥ 9॥

यजमान नमस्तुभ्यं आकाशाय नमो नमः ।
सर्वरूप नमस्तुभ्यं विश्वरूप नमोऽस्तु ते ॥ 10॥

ब्रह्मरूप नमस्तुभ्यं विष्णुरूप नमोऽस्तु ते ।
रुद्ररूप नमस्तुभ्यं महाकाल नमोऽस्तु ते ॥ 11॥

स्थावराय नमस्तुभ्यं जङ्गमाय नमो नमः ।
नमः स्थावरजङ्गमाभ्यां शाश्वताय नमो नमः ॥ 12॥

हुं हुङ्कार नमस्तुभ्यं निष्कलाय नमो नमः ।
अनाद्यन्त महाकाल निर्गुणाय नमो नमः ॥ 1*॥

प्रसीद मे नमो नित्यं मेघवर्ण नमोऽस्तु ते ।
प्रसीद मे महेशान दिग्वासाय नमो नमः ॥ 14॥

ॐ ह्रीं मायास्वरूपाय सच्चिदानन्दतेजसे ।
स्वाहा सम्पूर्णमन्त्राय सोऽहं हंसाय ते नमः ॥ 15॥

॥ फलश्रुति ॥

इत्येवं देव देवस्य महाकालस्य भैरवि ।
कीर्तितं पूजनं सम्यक् साधकानां सुखावहम् ॥ 16॥

कैसे शुरू हुए कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष

पंचांग के अनुसार हर माह में तीस दिन होते हैं और इन महीनों की गणना सूरज और चंद्रमा की गति के अनुसार की जाती है। चन्द्रमा की कलाओं के ज्यादा या कम होने के अनुसार ही महीने को दो पक्षों में बांटा गया है जिन्हे कृष्ण पक्ष या शुक्ल पक्ष कहा जाता है। पूर्णिमा से अमावस्या तक बीच के दिनों को कृष्णपक्ष कहा जाता है, वहीं इसके उलट अमावस्या से पूर्णिमा तक का समय शुक्लपक्ष कहलाता है। दोनों पक्ष कैसे शुरू हुए उनसे जुड़ी पौराणिक कथाएं भी हैं।

शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष से जुड़ी कथा

इस तरह हुई कृष्णपक्ष की शुरुआत

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार दक्ष प्रजापति ने अपनी सत्ताईस बेटियों का विवाह चंद्रमा से कर दिया। ये सत्ताईस बेटियां सत्ताईस स्त्री नक्षत्र हैं और अभिजीत नामक एक पुरुष नक्षत्र भी है। लेकिन चंद्र केवल रोहिणी से प्यार करते थे। ऐसे में बाकी स्त्री नक्षत्रों ने अपने पिता से शिकायत की कि चंद्र उनके साथ पति का कर्तव्य नहीं निभाते। दक्ष प्रजापति के डांटने के बाद भी चंद्र ने रोहिणी का साथ नहीं छोड़ा और बाकी पत्नियों की अवहेलना करते गए। तब चंद्र पर क्रोधित होकर दक्ष प्रजापति ने उन्हें क्षय रोग का शाप दिया। क्षय रोग के कारण सोम या चंद्रमा का तेज धीरे-धीरे कम होता गया। कृष्ण पक्ष की शुरुआत यहीं से हुई।

ऐसे शुरू हुआ शुक्लपक्ष

==========

कहते हैं कि क्षय रोग से चंद्र का अंत निकट आता गया। वे ब्रह्मा के पास गए और उनसे मदद मांगी। तब ब्रह्मा और इंद्र ने चंद्र से शिवजी की आराधना करने को कहा। शिवजी की आराधना करने के बाद शिवजी ने चंद्र को अपनी जटा में जगह दी। ऐसा करने से चंद्र का तेज फिर से लौटने लगा। इससे शुक्ल पक्ष का निर्माण हुआ। चूंकि दक्ष 'प्रजापति' थे। चंद्र उनके शाप से पूरी तरह से मुक्त नहीं हो सकते थे। शाप में केवल बदलाव आ सकता था। इसलिए चंद्र को बारी-बारी से कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में जाना पड़ता है। दक्ष ने कृष्ण पक्ष का निर्माण किया और शिवजी ने शुक्ल पक्ष का।

कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के बीच अंतर

==========

जब हम संस्कृत शब्दों शुक्ल और कृष्ण का अर्थ समझते हैं, तो हम स्पष्ट रूप से दो पक्षों के बीच अंतर कर सकते हैं। शुक्ल उज्ज्वल व्यक्त करते हैं, जबकि कृष्ण का अर्थ है अंधेरा।

जैसा कि हमने पहले ही देखा, शुक्ल पक्ष अमावस्या से पूर्णिमा तक है, और कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष के विपरीत, पूर्णिमा से अमावस्या तक शुरू होता है।

कौन सा पक्ष शुभ है ?

==========

धार्मिक मान्यता के अनुसार, लोग शुक्ल पक्ष को आशाजनक और कृष्ण पक्ष को प्रतिकूल मानते हैं। यह विचार चंद्रमा की जीवन शक्ति और रोशनी के संबंध में है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुक्ल पक्ष की दशमी से लेकर कृष्ण पक्ष की पंचम तिथि तक की अवधि ज्योतिषीय दृष्टि से शुभ मानी जाती है। इस समय के दौरान चंद्रमा की ऊर्जा अधिकतम या लगभग अधिकतम होती है - जिसे ज्योतिष में शुभ और अशुभ समय तय करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

तन्द्रिक सन्निपातज ज्वर/टायफाइड (Typhoid Fever)

यह ज्वर मरे हुए पशुओं व जानवरों की दुर्गन्ध से उत्पन्न होता है। इनसे खराब/दूषित हुई हवा स्वस्थ मनुष्यों की नाक और श्वास द्वारा शरीर में प्रवेश करके, भीतर पहुँच कर रोगोत्पादक विष का कार्य करती है। दुर्गन्धित चीजों के खाने-पीने से, गर्म व खुश्क मौसम और ऐसे ही अन्यान्य कारणों से मनुष्यों की आँतों में जख्म/घाव हो जाते हैं। अन्त में खराबी होने से ही विशेषकर टायफाइड ज्वर उत्पन्न होता है। यह एक संक्रामक रोग है। इसको आम बोलचाल की भाषा में "मोती झरा" अथवा "मियादी बुखार" कहा जाता है, इस ज्वर के आराम होने में एक निश्चित समय लगने के कारण लोग इसे मियादी ज्वर कहते हैं। कुछ रोगियों के पेट में बहुत छोटे-छोटे मोती सदृश्य सफेद चमकते दाने निकलने के कारण लोग इसे "मोती झरा" कहते हैं तथा आँतों में घाव होने कारण इसको अन्त्रिक. ज्वर कहा जाता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में इसको "एन्टरिक फीवर" भी कहा जाता है, जबकि प्राचीन आयुर्वेद संहिताओं में "सन्निपातज ज्वर" नाम से इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

एलोपैथिक मतानुसार-यह रोग (ज्वर) "साल्मोनिया टाइफी" नामक जीवाणु से होता है। सफाई के अभाव में गन्दगी होने पर यह रोग फैलता है। पीड़ित रोगों के मल-मूत्र में यह जीवाणु निकलते हैं। जोकि कम तापमान तथा नमी के वातावरण में बहुत बड़ी संख्या में पनपते हैं। इनको मक्खी, मच्छर आदि खाने-पीने के सामान दूध आदि तक पहुँचा देते हैं। वहाँ से यह खाने-पीने द्वारा स्वस्थ मनुष्य की आँत में पहुँचकर पनपते हैं और रोग फैलाते हैं। रोग का प्रसार प्रायः खाने के द्वारा होता है। जो रोगी रोग मुक्त हो जाते हैं उनके मल-मूत्र में इस रोग के कीटाणु मात्र महीनों नहीं बल्कि कई वर्षों तक होते हैं। यह रोग अधिकतर वयस्कों और बड़े बच्चों और किशोर वर्ग में होने वाली उत्तम बीमारी है। रोगी का मल-मूत्र उस रोग के संक्रमण के मुख्य स्रोत है। वैसे यह रोग संसार भर में पाया जाता है, किन्तु अपने देश भारतवर्ष में यह बहुतायत से देखने को मिलता है। संसार के पश्चिमी देशों में आजकल यह रोग निरन्तर कम होता जा रहा है जिसका मुख्य कारण वहाँ की सैनीटेशन व्यवस्था तथा शुद्ध जल वितरण व्यवस्था/प्रणाली है। सीवर लाइन में किसी प्रकार का लीकेज हो जाने के कारण भी ये पीने के पानी में सरलतापूर्वक पहुंच जाते हैं।

प्रथम सप्ताह ज्वर धीरे-धीरे चढ़ता चला जाता है जो एक सीढीनुमा तरीके से बढ़ता है। तदुपरान्त उसमें स्थिरता आ जाती है और ज्वर 99 F-100 F (39 C-40 C) पर ठहर जाता है। कुछ रोगियों को ज्वर सर्दी के साथ-शरीर टूटना, सिर दर्द, बेचैनी एवं पेट दर्द के लक्षण भी मिलते हैं। कभी-कभी सिर दर्द पहले प्रकट होता है। प्रारम्भिक दिनों में रोगी को खाने में अरुचि, कब्ज, पेट में अफारा व दर्द आदि होता है तथा इसके अतिरिक्त सूखी खाँसी, नक्सीर (नाक से रक्तस्राव नाक से खून आना), नमन अनिद्रा, आलस्य, शिथिलता एवं ज्वर की तुलना में नाड़ी की धीमी गति आदि लक्षण प्रमुख रुप से होते हैं। प्रायः रोगी को कब्ज रहता है, किन्तु बच्चों में दस्त व कै के लक्षण भी देखें जाते हैं। रोगी थका हुआ सा, असहाय और निर्बल होता है। प्रायः उस रोग से पीड़ित बच्चों का पेट फूल जाता है।

द्वितीय सप्ताह- दूसरा सप्ताह आरम्भ होते ही मोती सदृश लाल रंग के दाने पेट के ऊपरी हिस्से और छाती पर निकल जाते हैं। यह दाने दबाने पर अदृश्य/गायब हो जाते हैं। रोगी की जीभ शुष्क, खाँसी, बेचैनी, सुस्ती पेट फूलना आदि लक्षण भी होते हैं। रोगी के यकृत प्लीहा बढ़ जाते हैं। सीकम दबाने पर गुड़गुड़ाहट भी होती है। ज्वर अधिक होने पर नाड़ी की गति कम रहती है।

इस रोग ज्वर से पीड़ित बच्चों में अधिकतर ब्रोन्काइटिस तथा ब्रोन्को निमोनिया (Broncho-pheomonia) के लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं।

तृतीय सप्ताह- रोगी के पेट में हल्का अथवा तेज दर्द बना रहता है। वमन में अथवा मल में रक्त निकल सकता है। रोगी धीरे-धीरे मूर्च्छा की अवस्था में चला जाता है अथवा उचित चिकित्सा व्यवस्था एवं उचित आहार-विहार (पथ्यापथ्य) के अभाव में रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

चतुर्थ सप्ताह- रोगी की स्थिति में सुधार होने लगता है। ज्वर कम होकर भूख लगने लगती है। पेट का दर्द व अफारा कम हो जाता है। जीभ साफ-स्वच्छ हो जाती है।

नोट- ऊपर जो लक्षण हम लिख आये हैं, उनके आधार पर रोग निदान में कोई कठिनाई नहीं है। प्रथम सप्ताह में रक्त की जाँच कराने पर सफेद कणिकाओं की संख्या कम हो जाती है। "ब्लड कल्चर" में 70-90 प्रतिशत रोगियों के रक्त में जीवाणु मिलता है। दूसरे सप्ताह में "विडाल टेस्ट" कराने पर सामान्य से 4 गुणा अधिक टाइटर मिलता है। तीसरे सप्ताह में ब्लड कल्चर कराने पर जीवाणु उपस्थित रहता है। मल की जाँच से पहले और दूसरे सप्ताह में जीवाणु नहीं मिलता है, किन्तु तीसरे सप्ताह में जीवाणु मिलता है।

इस रोग के उपद्रव के स्वरुप आँत से रक्तस्राव हो सकता है। रोगी के मल में रक्त आना शुरु हो जाता है। ऐसे में एकदम तापमान कम हो जाता है

वासा(अडूसा)

वासा के पौधे को अड़ूसा के नाम भी जाना जाता है (हमारे गांव की भाषा में इसे रूस बोलते है) इसके फल, फूल, पतियां, जड़ जो हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होती है। इसमें भरपूर मात्रा में मिमोसिन एल्कलॉइड, टैनिन और टर्मोरिन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो हमें कई गंभीर बीमारियों से बचाते है, बस इसको सही से इस्तेमाल करने की जरुरत होती है।

वासा के बारे में कौन नहीं जानता। असल में दादी-नानी के जमाने से वासा का प्रयोग सर्दी-जुकाम के इलाज के लिए घरेलू नुस्ख़ों के तौर पर सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाता है। वासा के फूलों में शहद के जैसी मिठास वाला पदार्थ निकलता है। आयुर्वेद में भी वासा का औषधि के रुप में विशिष्ट स्थान है।

आयुर्वेद में कहा जाता है कि वासा वात, पित और कफ को कम करने में बहुत काम आता है। इसके अलावा वासा सिरदर्द, आँखों की बीमारी, पाइल्स, मूत्र रोग जैसे अनेक बीमारियों में बहुत फायदेमंद साबित होता है।

1.अगर किसी इंफेक्शन के कारण मुंह में घाव या सूजन हुआ है, तो अड़ूसा का प्रयोग जल्दी आराम देता है. यदि केवल मुख में छाले हों तो अड़ूसा के १-३ पत्तों को चबाकर उसके रस को चूसने से लाभ होता है,इसकी लकड़ी का दातौन करने से मुख के रोग दूर हो जाते हैं,वासा के 50 मिली काढ़े में एक चम्मच गेरू और दो चम्मच मधु मिलाकर मुख में रखने से मुंह का घाव सूख जाता है।

२.अगर आप दांत दर्द से परेशान हैं, इसके लिए अड़ूसा के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से दांत दर्द कम होता है.

3.अक्सर हर किसी को सिरदर्द की शिकायत रहती है, सिर दर्द से निजात पाने के लिए पेन किलर की जगह अड़ूसा का सेवन करें, अड़ूसा के छाया में सूखे हुए फूलों को पीस लें 1-१ ग्राम फूलों के चूर्ण में समान मात्रा में गुड़ मिलाकर खाएं आपको सिर दर्द से राहत मिलेगी।

4.अर्थराइटिस के दर्द में फायदेमंद जोड़ों में दर्द है तो आप वासा की मदद से उसे दूर कर सकते हैं,वासा में एंटी-इंफ्लामेटरी गुण होते हैं. यूरिक एसिड बढ़ने के कारण घुटनों में दर्द होता है. आप अगर वासा का पाउडर पानी के साथ लें, तो यूरिक एसिड कम होगा और दर्द ठीक हो जाएगा. आप चाहें तो वासा की पतियों का मिश्रण बनाकर लेप की तरह घुटने या ज्वॉइंट्स पर लगा सकते हैं।

5.खांसी व सांस फूलने की बीमारी में फायदेमंद अगर किसी की सांस फूलता है या फिर सूखी खांसी है तो आप वासा की पतियों का रस निकाल कर उसमें शहद मिलाकर उसका सेवन करें, सूखी खांसी को दूर करने के लिए अड़ूसा के पते, मुनक्का और मिश्री का काढ़ा पीने से जल्द से जल्द खांसी से राहत मिलेगी।

6.तपेदिक जैसे संक्रामक रोग में भी वासा का औषधीय गुण बहुत फायदेमंद तरीके से काम करता है। अड़ूसा के पत्तों के १०-३० मिली काढ़े में छोटी पीपल का 1 ग्राम चूर्ण मिलाकर पिलाने से तपेदिक और खांसी में आराम मिलता है।

7.अक्सर मसालेदार या बाजार का कुछ भी तला हुआ खाने संक्रमण हो जाता है ,अगर ऐसे संक्रमण के कारण दस्त हो रहा और ठीक नहीं हो रहे है ,तो वासा का घरेलू उपाय जल्द आराम दिलाने में मदद करेगा। 10-१० मिली वासा पत्ते के रस को दिन में तीन-चार बार पीने से दस्त में लाभ होता है।

8.फोड़ा अगर सूख नहीं रहा है तो वासा का इस तरह से प्रयोग करने पर जल्दी सूख जाता है। फोड़े पर प्रारंभ में ही इसके पत्तों को पानी के साथ पीसकर लेप कर दें, तो फोड़ा बैठ जाता है और कोई कष्ट नहीं होता।

9.वासा का औषधीय गुण किडनी के दर्द से आराम दिलाने में बहुत फायदेमंद है। अड़ूसे और नीम के पत्तों को गर्म कर नाभि के निचले भाग पर सेंक करने से तथा वासा के पत्तों के 5 मिली रस में 5 मिली शहद मिलाकर पिलाने से गुर्दे के भयंकर दर्द में आश्चर्यजनक रुप से लाभ पहुंचता है।

10.अगर पीलिया हुआ है और आप इसके लक्षणों से परेशान हैं तो वासा का सेवन इस तरह से कर सकते हैं। वासा पञ्चाङ्ग के 10 मिली रस में मधु और मिश्री समान मात्रा में मिलाकर पिलाने से पीलिया रोग ठीक हो जाता है।

नोट वासा का सेवन आयुर्वेदिक डॉ की सलाह से करें

सीएम रेखा गुप्ता ने किया महाशिवरात्र पर रुद्राभिषेक, प्रभु से मांगी कार्य करने की शक्ति

सुषमा रानी

महाशिवरात्रि के पर्व पर बुधवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता चांदनी चौक स्थित श्री गौरी शंकर मंदिर में पहुंचीं और उन्होंने रुद्राभिषेक किया। इस दौरान उन्होंने भगवान की पूजा-अर्चना कर काम करने की शक्ति मांगी। साथ ही सभी को महाशिवरात्रि पर्व की बधाई दी। इस दौरान सीएम रेखा गुप्ता के साथ सांसद प्रवीण खंडेलवाल दिल्ली भाजपा नेता प्रवीण शंकर कपूर भूपेंद्र गोठवाल और सतीश जैन आदि मौजूद रहे।

नई दिल्ली। महाशिवरात्रि के अवसर पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने चांदनी चौक स्थित श्री गौरी शंकर मंदिर में रुद्राभिषेक किया। इस दौरान सांसद प्रवीण खंडेलवाल, दिल्ली भाजपा नेता प्रवीण शंकर कपूर, भूपेंद्र गोठवाल और सतीश जैन आदि मौजूद रहे।

वहीं, मंदिर समिति की ओर से सुभाष गोयल और बलराम गर्ग व अनेक पुजारियों ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता (CM Rekha Gupta) को आशीर्वाद दिया और उनका अभिनंदन किया।

बताया गया कि इस दौरान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने प्राचीन मंदिर की आगंतुक पुस्तिका में हर-हर महादेव लिखा। वहीं, रुद्राभिषेक के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि मैंने भगवान शिव से समस्त मानव जाति की भलाई के लिए प्रार्थना की और दिल्ली को विकसित दिल्ली बनाने और काम करने की शक्ति मांगी। उन्होंने सभी को शिवरात्रि पर्व की बधाई दी।

हर-हर भोले के जयकारों से गूंजते रहे शिवालय

महाशिवरात्रि पर हर-हर भोले के जयकारों से शिवालय गूंजते रहे। पुरानी दिल्ली में रात्रि दो बजे से ही शिवालयों में जयकारों के साथ पूजा अर्चना शुरू हो गई, जो बुधवार देर रात्रि तक चलती रही। चांदनी चौक स्थित ऐतिहासिक गौरी शंकर मंदिर में महाशिवरात्रि पर एक लाख से अधिक लोगों ने भगवान शिव का दर्शन पूजन किया।

यहां शिव की आराधना करने वालों में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता तथा चांदनी चौक के सांसद प्रवीन खंडेलवाल भी शामिल रहे। जबकि, कनाट प्लेस स्थित प्राचीन शिव मंदिर में नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज ने भोले का जलाभिषेक किया।

महाशिवरात्रि पर भक्तों की मौजूदगी को देखते हुए शिवालयों को विशेष तौर पर फूलों, पत्तों तथा लड़ियों से सजाया गया था। साथ ही सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए थे। बैरिकेड्रिंग व रस्सियों से कतारें बनाई गई थी। गौरी शंकर मंदिर के साथ ही चांदनी चौक स्थित वनखंडी मंदिर व झंडेवाला मंदिर समेत सभी शिवालयों में भक्तों का तांता लगा रहा।

चांदनी चौक में तो दिनभर ड़ेढ से दो किमी से अधिक की लाइनें लगी रही। लोग घंटों इंतजार में भोले के जयकारों के साथ दर्शन के लिए अपनी बारी का इंतजार करते दिखे। इसमें सभी आयु वर्ग के लोग शामिल थे। जो उत्साह व भक्तिभाव से आगे बढ़े जा रहे थे।

वहीं, मंदिरों के आस-पास, दूध, धतुर, बेलपत्र, बेर व फूल माला बेचने वालों की दुकानें लगी है। इसी तरह, घरों और मंदिरों में रुद्राभिषेक व महामृत्युंजय जैसे विशेष अनुष्ठान हुए तथा लोगों ने व्रत रखा। इसके पूर्व काफी ऐसे लोग जो कुंभ स्नान को प्रयागराज नहीं जा पाए, उन्होंने कुंभ गए परिचित लोगों से संगम के पवित्र जल का अंश से स्नान कर सुखमय जीवन की कामना की।

एक्शन मोड में आई एमसीडी, पार्कों में कूड़ा फेंकने वालों को जान लेना चाहिए ये बात

एमसीडी ने पार्कों में कचरा फेंकने वालों पर सख्त कार्रवाई करने का फैसला किया है। सभी 12 जोन के उपायुक्तों को अपने-अपने क्षेत्रों में तेजी से कार्रवाई करने और पार्कों से कचरे की पूरी तरह से सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। अवैध रूप से कचरा फेंकने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी जिसमें एनजीएटी द्वारा निर्धारित जुर्माना भी शामिल है।

नई दिल्ली। एमसीडी ने पार्कों में कूड़ा फेंकने पर सख्त कार्रवाई करने की तैयारी कर ली है। MCD के एक अधिकारी के अनुसार, सभी 12 जोनों के पार्कों से ठोस कूड़ा हटाने के लिए विशेष अभियान शुरू किया गया है।

12 जोनों के उपायुक्तों ने दिए निर्देश : इसे प्रभावी बनाने के लिए सभी 12 जोनों के उपायुक्तों को अपने-अपने क्षेत्रों में तेजी से कार्रवाई करने और पार्कों से कूड़ा पूरी तरह साफ करने के निर्देश दिए गए हैं।

पार्कों में अवैध रूप से कूड़ा फेंकने वालों के खिलाफ सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी, जिसमें एनजीएटी द्वारा निर्धारित जुर्माना भी शामिल है।

इस संबंध में एमसीडी ने जागरूक लोगों से अवैध रूप से कूड़ा फेंकने की घटनाओं की शिकायत एमसीडी के 311 एप पर करने का आग्रह किया है, जिससे शहर की सफाई व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिलेगी।

होगी नियमित निगरानी : इस अभियान के तहत पर्यावरण प्रबंधन सेवा विभाग और उद्यान विभाग आपस में समन्वय स्थापित कर पार्कों से कचरा हटाने की प्रगति की नियमित निगरानी करेंगे।

समन्वित कार्रवाई और निरंतर निगरानी के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से कचरा हटाया जाएगा और हरित क्षेत्रों का सौंदर्यीकरण किया जाएगा।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष के पद पर सर्वसम्मति से नियुक्त किए गए रजनीश रंजन सिन्हा

नई दिल्ली। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा दिल्ली प्रदेश कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डीxकेx सक्सेना के नेतृत्व में और राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी जितेंद्र नाथ सिंह और राष्ट्रीय महामंत्री अजय श्रीवास्तव (नीलू) के द्वारा मनोनीत किए गए पर्यवेक्षक ए के जौहरी (उत्तर प्रदेश पश्चिम-अध्यक्ष) और राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री विपिन जौहरी के नेतृत्व में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष के पद पर सर्वसम्मति से नियुक्त किए गए रजनीश रंजन सिन्हा। इस कार्यक्रम की शुरुआत में आराध्य देव चित्रगुप्त भगवान की स्तुति से हुई। मौके पर मौजूद महेंद्र सक्सेना (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष), रेखा श्रीवास्तव (महिला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय अध्यक्ष), शेफाली भटनागर(महिला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), आर डी श्रीवास्तव (राष्ट्रीय मंत्री), एस के निगम, राजीव रंजन वर्मा, संजय कुमार सिन्हा, मनीष कुमार श्रीवास्तव, अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रेम भटनागर, अखिल अस्थाना, शेखर सुमन श्रीवास्तव एवं अन्य चित्रांश बंधु मौजूद थे। सभी लोगों ने बुके और शॉल पहनाकर शुभकामनाएं दी।

महाशिवरात्रि पर यमुना प्रेमियों ने खेली यमुना संग फूलों की होली

- ब्रज के लोक कलाकारों ने यमुना संसद के बैनर तले आयोजित हमारा राग, हमारा अनुराग...यमुना मैया के साथ खेले फाग ' कार्यक्रम में बांधा समां
- सांसद बांसुरी स्वराज, विधायक राजकुमार भाटिया समेत दूसरे क ई जनप्रतिनिधि हुए शामिल, सभी ने एकसुर में यमुना नदी की अविरलता और निर्मलता के प्रति प्रतिबद्धता

दिलीप देवतवाल, नई दिल्ली।

महाशिवरात्रि पर्व पर सोनिया विहार वाटर स्पोर्ट्स क्लब, सोनिया विहार में यमुना नदी के तट पर 'हमारा राग, हमारा अनुराग...यमुना मैया के साथ खेले फाग ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यमुना संसद की तरफ से आयोजित कार्यक्रम में यमुना नदी को अविरल और निर्मल करने का संकल्प लिया। इस मौके पर यमुना भक्तों ने फूलों की होली खेली और ब्रज के कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं।

कार्यक्रम स्थल पर फाइन आर्ट्स के छात्रों ने लाइव पेंटिंग की और सेंड आर्ट के जरिए यमुना की अतीत से भविष्य की यात्रा को जीवंत किया। यमुना नदी को अविरल और नार्मल करने के लिए पूजन करने के साथ यमुना आरती और यमुना जी को चुनरी चढ़ाई गई। इस मौके पर सांसद बांसुरी स्वराज, विधायक राज कुमार भाटिया, मोहन सिंह बिष्ट, अनिल गोयल, पूनम शर्मा समेत बड़ी संख्या में यमुना प्रेमी मौजूद रहे।

इससे पहले बुधवार दोपहर 12 बजे शंखनाद के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। इसके बाद पूजन, हवन और यमुना नदी की आरती की गई। साथ में यमुना प्रेमियों ने यमुना संग फूलों की होली समारोह का आयोजन किया गया है। इस मौके पर ब्रज के लोक कलाकारों ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया।

यमुना संसद के संयोजक रविशंकर तिवारी ने कहा कि हमारा मकसद यमुना के शुद्धिकरण में समाज की सहभागिता सुनिश्चित करनी है। समाज और सरकार के साथ-साथ आने से ही यमुना साफ होगी। वहीं, सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि हमारी सरकार की प्राथमिकता में यमुना जी को स्वच्छ करने का है। पीएम नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में हम सब इस काम में कामयाब भी होंगे। राजकुमार भाटिया ने कहा कि दिल्ली सरकार ने इस दिशा में काम भी शुरू कर दिया है। जल्द ही इसकी विस्तृत कार्ययोजना दिल्ली वालों के सामने होगी। दूसरे सभी विधायकों ने इसके प्रति प्रतिबद्धता दिखाई।

लाइव पेंटिंग और सैंड आर्ट का भी यमुना प्रेमियों ने उठाया लुत्फ

कार्यक्रम के दौरान एसडीएसएस की टीम ने विनय दास की लीडरशिप में सैंड आर्ट से यमुना नदी को जीवंत किया। वहीं करीब 120 फिट की पेंटिंग बनाई गई। इसमें अलग-अलग समय की यमुना को दर्शाया गया गया था। खास आकर्षण कृष्ण काल, मुगल काल, ब्रिटिश काल, आज की यमुना का दर्शन रहा। साथ ही समाज और सरकार से सहयोग से भविष्य की अविरल और निर्मल यमुना को दिखाया गया। दूसरी तरफ पंकज फाइन आर्ट अकेडमी की तरफ से लाइव पेंटिंग बनाई गई। इसमें वंदन ने यमुना को साफ करते हुए यमुना को दिखाया गया। वहीं, कशिश गुप्ता ने भविष्य की यमुना दिखाई ।पारस अरोड़ा यमुना और दिल्ली के संबंध को दिखाया। इसके अलावा कुसुम और उनकी टीम फूलों से यमुना की रंगोली बनाई।

मुख्यमंत्री और मंत्रियों के कार्यालय से डॉ. आंबेडकर की तस्वीर हटाकर भाजपा ने पीएम मोदी की लगाई, इससे बाबा साहब के अनुयायी आहट हैं- संजीव झा

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली विधानसभा के अंदर 'जय भीम' के नारे लगाने पर आम आदमी पार्टी के सभी विधायकों को तीन दिन के लिए सदन से निष्कासित करने को लेकर पार्टी ने भाजपा पर तीखा हमला बोला है। ₹आपक्ष के वरिष्ठ नेता व विधायक संजीव झा ने कहा कि बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के अपमान के खिलाफ आवाज उठाने पर भाजपा ने आम आदमी पार्टी के सभी विधायकों को तीन दिन के लिए सदन से बाहर करा दिया। भाजपा के राज में 'जय भीम' बोलना गुनाह हो गया है। भाजपा ने मुख्यमंत्री और मंत्रियों के कार्यालय से डॉ. आंबेडकर की तस्वीर हटाकर उनकी जगह पीएम मोदी की फोटो लगा दी है। इससे बाबा साहब के देशभर के अनुयायी आहट हैं। देश का जनतंत्र बाबा साहब के संविधान से चलता है, बाबा साहब से बड़ा कोई नहीं है, लेकिन भाजपा प्रधानमंत्री मोदी को बाबा साहब से बड़ा मानती है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और विधायक संजीव झा और कुलदीप कुमार ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय पर संयुक्त प्रेस वार्ता की। संजीव झा ने कहा कि दिल्ली विधानसभा सत्र के पहले दिन मुख्यमंत्री कक्ष से बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की तस्वीर हटाकर वहां प्रधानमंत्री मोदी की फोटो लगाई गई। यह देखकर सभी को पीड़ा हुई। हमारी नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने इस बात को लेकर विधानसभा अध्यक्ष के सामने अपनी चिंता जाहिर की। लेकिन लगातार अपनी पीड़ा व्यक्त करने के बावजूद विधानसभा अध्यक्ष ने इस पर कोई निर्देश नहीं दिया। इससे न केवल हम विधायक साथी बल्कि देश भर में जो लोग भी बाबा साहब से प्यार और उनका सम्मान करते हैं, वो सब आहत हुए। अगले दिन एलजी साहब ने अभिभाषण दिया, जहां हमने स्पीकर से दोबारा मांग की कि बाबा साहब का जो चित्र हटाया गया था उसे दोबारा उसी जगह लगा दिया जाए।

संजीव झा ने कहा कि जिस तरह भाजपा की नई सरकार ने बाबा साहब की तस्वीर हटाकर उसकी जगह मोदी जी की तस्वीर लगा दी, उससे सवाल उठता है कि क्या भाजपा प्रधानमंत्री मोदी को बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर से भी बड़ा मानती है? हमने यही सवाल स्पीकर से पूछा, लेकिन उनका कोई निर्देश न आना इस बात को दर्शाता है कि भाजपा की सरकार और उसके नेता मानते हैं कि अब नरेंद्र मोदी बाबा साहब से बड़े हो गए हैं।

संजीव झा ने बताया कि हम लगातार स्पीकर के सामने अपनी बात रख रहे थे और उनके निर्देश का इंतजार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने इस पर कोई निर्देश देने के बजाय हम सबको मार्शल से विधानसभा से बाहर निकलवा दिया। आज चाहें विधानसभा हो, स्पीकर हों, एलजी का अभिभाषण हो या देश में लोकतंत्र की यह व्यवस्था हो, सब बाबा साहब और उनके संविधान पर चलता है। इसलिए देश में बाबा साहब और संविधान से बड़ा कोई नहीं है। हम बाबा साहब का यह अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमारे विधायकों को न केवल एक दिन के लिए सदन से निकाला गया, बल्कि रिजॉल्यूशन लाकर सत्ता पक्ष ने हमें तीन दिन के लिए सदन में हिस्सा लेने से वंचित किया।

संजीव झा ने कहा कि हमारा अपराध केवल इतना था कि हम बाबा साहब भीमराव अंबेडकर और शहीद-ए-आजम भगत सिंह की फोटो हटाकर उनकी जगह प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर लगाए जाने पर सवाल उठा रहे थे। इसका मतलब है कि ये लोग बाबा साहब से नफरत करते हैं। यह कोई पहली बार नहीं है। इससे पहले देश के गृह मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में कहा था कि जितना बार ये लोग अंबेडकर-अंबेडकर करते हैं उतनी बार अगर भगवान का नाम ले लें तो इनको मुक्ति मिल जाए। हमें तो मुक्ति संविधान और बाबा साहब की व्यवस्था से मिलेगी। बाबा साहब के प्रति भाजपा की यह नफरत दिल्ली विधानसभा में दिखी।

संजीव झा ने कहा कि भाजपा मानती है कि नरेंद्र मोदी बाबा साहब से बड़े हो गए हैं और अगर नहीं मानते तो बाबा साहब की फोटो उसी जगह लगा दी जाए, जहां पहले उनकी फोटो लगी थी। नहीं तो हम अपना विरोध लगातार जारी रखेंगे, जब तक भाजपा अपने कुकृत्य से बाज नहीं आ जाती।

वहीं, विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि बुधवार को हमें दिल्ली विधानसभा से तीन दिन के लिए निलंबित कर दिया गया। हमारा गुनाह केवल इतना था कि हमने उस सदन के अंदर जो बाबा साहब अंबेडकर के संविधान से चलता है, वहां जय भीम के नारे लगाए थे, जबकि भाजपा नेताओं ने मोदी-मोदी के नारे लगाए। हमने जय भीम के नारे लगाए इसलिए हमें स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने दिल्ली विधानसभा सदन से बाहर कर दिया। वहीं, भाजपा के लोगों ने मोदी-मोदी के नारे लगाए तो स्पीकर साहब ने उनकी सराहना करते हुए उन्हें बैठा दिया।

कुलदीप कुमार ने कहा कि अगर बाबा साहब डॉ. अंबेडकर का नारा लगाने की वजह से हमें बाहर निकाला जाएगा तो हम पीछे हटने वाले लोग नहीं हैं। हम लगातार जय भीम का उद्घोष करते रहेंगे। अगर इनमें हिम्मत है तो हमें रोक कर दिखा दे। दिल्ली में 27 साल बाद भाजपा की सरकार आई तो उसके पास दिल्ली सरकार के काम आगे बढ़ाने और दिल्लीवालों के लिए काम करने का मौका था। लेकिन इन्होंने सरकार में आने के साथ ही सबसे पहले मुख्यमंत्री कार्यालय से बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर और भगत सिंह की फोटो हटाने का काम किया।

कुलदीप कुमार ने आगे कहा कि इससे संदेश साफ है कि अमित शाह ने संसद में जो बात कही थी भाजपा सरकार ने उसे साबित कर दिया। इन्होंने केवल मुख्यमंत्री कार्यालय नहीं बल्कि उसी दिन दिल्ली के सभी मंत्रियों के कार्यालय से भी एक साथ बाबा साहब अंबेडकर और भगत सिंह की तस्वीर हटवा दी। वरना किसी मंत्री की इतनी हिम्मत नहीं है कि वह खुद अपने ऑफिस से बाबा साहब की तस्वीर को हटा दे। वह देश के गृह मंत्री अमित शाह का आदेश था कि बाबा साहब और शहीद-ए-आजम भगत सिंह की तस्वीर हटाकर उसकी जगह नरेंद्र मोदी की फोटो लगाई जाए।

कुलदीप कुमार ने कहा कि इन लोगों ने यह साबित कर दिया कि यह लोग पिछड़े और दलित लोगों का वोट तो लेना चाहते हैं लेकिन यह बाबा साहब अंबेडकर से नफरत करते हैं। आजादी के इतने वर्षों बाद भी इन्हें बाबा साहब और उनके संविधान से नफरत है। देश की संसद में रिनोवेशन के नाम पर बाबा साहब की प्रतिमा को उसकी जगह से हटाकर पीछे लगाने वाली भी यही मोदी सरकार है। इन्होंने यह केवल एक शुरुआत की है। अगर आज हमारे बहुजन समाज के लोगों ने आवाज नहीं उठाई तो यह मोदी सरकार और भाजपा के लोग जिनकी विचारधारा बाबा साहब के विरोधी है, ये हर जगह से बाबा साहब की प्रतिमाओं और तस्वीरों को हटाने का काम करेंगे, जैसे इन्होंने संसद और दिल्ली विधानसभा से हटाया। हम सबको मिलकर इसके खिलाफ आवाज उठानी होगी।

कुलदीप कुमार ने कहा कि आम आदमी पार्टी विपक्ष में है। जब तक भाजपा बाबा साहब की तस्वीर को उनकी पुरानी जगह पर नहीं लगाती, हम इसका पुरजोर विरोध करेंगे। भाजपा इस वहम में न रहे कि नरेंद्र मोदी बाबा साहब से बड़े हैं। नरेंद्र मोदी और अमित शाह बाबा साहब डॉ. अंबेडकर के पैर की धूल के बराबर भी नहीं हैं। बाबा साहब ने इस देश को ऐसा संविधान दिया जो आपस में भाईचारे और समानता की बात करता है। दूसरी तरफ नरेंद्र मोदी देश को बांटने, आपस में लड़ाने और नफरत की बात करते हैं। हम सब मिलकर इसके खिलाफ आवाज बुलंद करेंगे।

कुलदीप कुमार ने कहा कि इन्होंने तीन दिन के लिए हमें सदन से निलंबित किया है। ये लोग हमें सदन से निलंबित कर सकते हैं लेकिन हमारी आवाज को नहीं दबा सकते हैं। हम आवाज उठाएंगे। जब तक बाबा साहब की तस्वीर वापस नहीं लग जाती हम अपनी आवाज उठाते रहेंगे। भाजपा को सद्बुद्धि मिले और वह बाबा साहब का सम्मान करना सीखे। वह बाबा साहब का अपमान करने की बजाय उनकी तस्वीर को वहां वापस लगाने का काम करे।

दिल्ली की नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को मुस्कान जगदीश ने दी बधाई

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पूर्व प्रदेश मंत्री भाजपा युवा मोर्चा दिल्ली एवं कालिंदी कॉलेज दिल्ली विश्विद्यालय से अध्यक्ष रही मुस्कान जगदीश ने देश की राजधानी दिल्ली की नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता को भाजपा राष्ट्रीय कार्यालय में बधाई एवं सफल कार्यकाल की अनंत शुभकामनाएं दीं।

मुस्कान जगदीश का कहना है कि रेखा गुप्ता एक कुशल नेत्री के रूप में सभी वर्गों को साथ लेकर चलते हुए महिला सशक्तिकरण, युवा कौशल और गरीबों की भलाई के काम को प्राथमिकता से आगे बढ़ाएंगी। जनता जनार्दन ने जिस आशा और अपेक्षा के साथ भाजपा को अभूतपूर्व आशीर्वाद दिया है, उस पर खरा उतरते हुए, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जन-जन को समृद्धि सुनिश्चित करते हुए दिल्ली को स्वच्छ, सुरक्षित और विकसित बनाने के लिए सदैव प्रयासरत करेंगी।

मुस्कान जगदीश का कहना है कि हम सभी को पूर्ण विश्वास है कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में भाजपा की डबल इंजन की सरकार दिल्ली में प्रगति एवं विकास के आयाम स्थापित करेगी। भाजपा के लिए नारी सशक्तिकरण महज एक नारा नहीं बल्कि असल मायने में महिला सशक्तिकरण को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है और दिल्ली को महिला मुख्यमंत्री मिलना मोदी जी की नारी शक्ति के उत्थान और महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

महाशिवरात्रि पर्व पर श्रद्धालुओं की सेवा में लगी सिविल डिफेंस मथुरा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा: हर वर्ष की भांति इस बार भी जनपद में जगह जगह पर मथुरा नगर में आने वाले मंदिरों शिवालयों में श्रद्धालुओं एवं कावड़िया की सुविधा हेतु पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण साथ ही महाशिवरात्रि पर्व में किसी भी समस्या का सामना श्रद्धालुओं ना करना पड़े इसके लिए सिविल डिफेंस एवं आपदा मित्र ड्यूटी पर अपनी सेवाएं देते रहे जिसमे नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के पोस्ट वार्डन एवं आपदा मित्र अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम ने फर्स्ट एड किट के साथ सभी मंदिरों एवं चौराहों पर अपनी सेवाएं देते नजर आए। साथ ही जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के जिला आपदा विशेषज्ञ सुशील कुमार एवं सिविल डिफेंस मथुरा के उप नियंत्रक सुमित मौर्य के नेतृत्व में महाशिवरात्रि पर्व को सकुशल सम्पन्न कराया गया। मेडिकल टीम और पुलिस प्रशासन के साथ सिविल डिफेंस के पोस्ट वार्डन अशोक यादव, गिरीश कुमार सैक्टर वार्डन शैलेश खण्डेलवाल, सैक्टर वार्डन यतेंद्र, जितेन्द्र कुमार धनगर, सोहन लाल, शुभम्-कुमार, राम सैनी, मोहित खंडेलवाल ,सुनीता उपाध्याय, प्रभात कुमार, गुलशेर, चरन सिंह आदि मौजूद रहे।

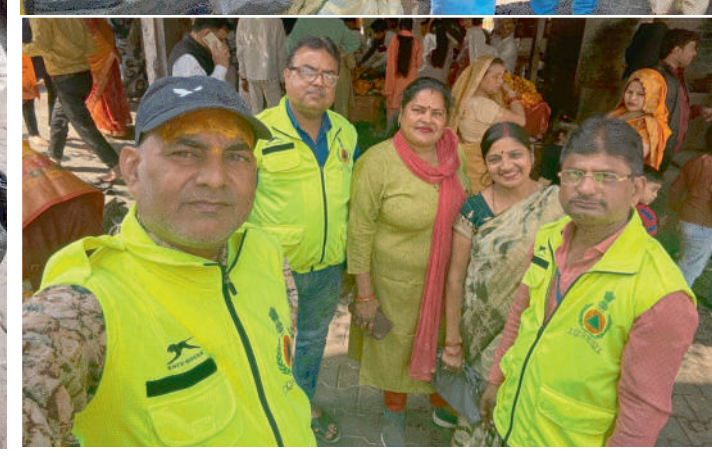

महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में पोला भाई ग्रुप द्वारा महादेव मन्दिर पर किया गया सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विशाल भंडारे का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। माँ चामुण्डा देवी एवं पालीवाल पार्क वाले बाबा की असीम अनुकम्पा से महाशिवरात्रि के पावन पर्व के उपलक्ष्य में आज़ भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं विशाल भंडारे का आयोजन पोला भाई ग्रुप द्वारा पालीवाल पार्क वाले मन्दिर पर किया गया।

पोला भाई ने बताया कि आज़ भोलेनाथ की लगुन सगाई व रातजगा का कार्यक्रम रखा गया और माँ पार्वती की अनुकम्पा से तेल, हल्दी व मेहंदी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। साथ ही विवाह का मुख्य मुख्य कार्यक्रम भी रखा गया है। इसीक्रम में मंदिर के महंत आचार्य सचिव दीक्षितजी एवं डॉ॰ देव स्वरूप शास्त्री ने बताया कि भोलेनाथ के विवाह के उपलक्ष्य में दोपहर 3:00 बजे भंडारा प्रारम्भ कर दिया जाएगा जो कि रात्रि तक चलता रहेगा। कार्यक्रम हेतु मंदिर परिसर में विशाल फूल बंगला सजाया जाएगा तथा बाबा का विशेष श्रंगार किया जाएगा एवं क्षेत्र को विभिन्न सुंदर झांकियों से सजाया जाएगा। सायं 7:00 बजे भव्य महाआरती का आयोजन किया गया है। आयोजन में हजारों भक्तजनों के प्रभु दर्शन एवं प्रसाद को ग्रहण करने की व्यवस्था की गई है। इस भव्य कार्यक्रम में कार्यकारिणी के सदस्य आशू जैन, पोला भाई, पप्पू भाई, अरविन्द उपाध्याय, राजा शर्मा, आचार्य सचिन दीक्षित, डॉ. केसर सिंह, अरविंद गुप्ता, कल्लू भाई, निक्कू पंडित, अनिल चैहान, भूपेंद्र शर्मा, अरूण शुक्ला, हनी, यतिन, लालू, राहुल गौतम, आकाश भारती, काकू भाई, अर्जुन भाई, चेतन बघेल, रामलखन, राजकुमार, सचिन ठाकुर, सनी, नंदू , देबू उमेश आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

आगरा में गंगाजल आपूर्ति के बावजूद नहीं सुधर रहे हालात

आगरा, पंकज जैन। जनपद में गंगाजल की आपूर्ति के बावजूद साफ पानी की समस्या बनी हुई है, और शहर के कई इलाकों में, खासकर बोदला सेक्टर-4 में, जल निगम की लापरवाही के कारण लोगों को हरा गंदा और बदबूदार पानी मिल रहा है। कई दिनों से यहां के निवासियों को इस हरे गंदे पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, गंगाजल परियोजना के तहत सरकार ने 3,000 करोड़ रुपये खर्च कर आगरा में गंगाजल की आपूर्ति की व्यवस्था की थी, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही है। एक टाइम ही गंगा जल आता हैं।

बोदला सेक्टर-4 के निवासियों का कहना है कि "जल निगम में बार-बार शिकायत करने के बावजूद, पानी की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा है। गंगाजल के सपने को लेकर यहां के लोग उम्मीद लगाए बैठे थे कि पानी की समस्या का समाधान हो जाएगा, लेकिन जल निगम की लापरवाही के कारण हरा बदबूदार पानी और गंदगी की समस्या अब भी बनी हुई है। इससे घरों के रोज़मर्रा के कामकाजी जीवन में खासी परेशानी उत्पन्न हो रही है। बच्चों को स्कूल भेजने से लेकर, कार्यालय जाने तक और घरों में सामान्य उपयोग के लिए साफ़ पानी की एक बूंद के लिए लोग संघर्ष कर रहे हैं।"

उन्होंने आगे कहा, ₹इस स्थिति

से लोग निराश हैं, और यह सवाल उठा है कि जब गंगाजल की आपूर्ति हो रही है, तो फिर यह हरा गंदा पानी क्यों आ रहा है? इसे देखकर यह साफ होता है कि पानी की गुणवत्ता और व्यवस्था में गंभीर कमियां है, और सरकारी प्रयासों का असर सही तरीके से नजर नहीं आ रहा है।"

शिवरात्रि पर कानपुर के मंदिरों में उमड़े भक्त, रही कड़ी सुरक्षा व्यवस्था

सुनील बाजपेई

कानपुर। शिवरात्रि के पावन पर्व पर आज यहां मंगलवार को शिव मंदिरों में भोले भंडारी भगवान शिव के भक्त उमड़ पड़ेI बम बम भोले के जयकारों के बीच उन्होंने मंदिरों में अपनी पूजा अर्चना की। इस दौरान सुरक्षा बेहद बड़े इंतजाम रखे गए थे। सुरक्षा की विशेष व्यवस्था यहां के प्रमुख परमट शिवराजपुर के खेरेश्वर, शिव मंदिर , जाजमऊ सिद्धनाथ मंदिर समेत जिले के अन्य सभी ऐतिहासिक शिव मंदिरों में भी और जाजमऊ के सिद्धनाथ मंदिर समेत अन्य सभी शिव मंदिरों में भी की गई थी।

इसमें इस दौरान भगवान शिव के दर्शन पूजन अर्चन के लिए भक्तों की भीड़ रात2:00 बजे से ही परमट मंदिर में जुट गई थी। इनमें सर्वाधिक भीड़ युवाओं की भी रही, जिनमें युवतियों की संख्या भी काफी दिखाई पड़ी।

इस दौरान उनमें शिव के दर्शन को लेकर जमकर धक्का-मुक्की भी हुई। कई बार ऐसी भी नौबत आई जब पुलिस को भी भीड़ को नियंत्रित करने के लिए कड़ी मेहनत से जूझना पड़ा। इसी तरह से चकेरी के प्रसिद्ध श्री सिद्धनाथ मंदिर में भी भक्तों की भारी भीड़ उमड़ी। यहां भी लोगों ने पूजन अर्चन के साथ लोगों ने भगवान शिव का दुग्ध अभिषेक किया। इस दौरान पुलिस प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी घूम घूम कर मंदिरों में सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते रहे।

आज शिवरात्रि पर जिन शिव मंदिरों में सर्वाधिक भीड़ हुई उनमें से शिवराजपुर के खेरेश्वर शिव मंदिर भी शामिल रहा। जगत जननी मां जगदंबा और बाबा भोलेनाथ के अनन्य भक्त समाज सेवी हंसपुरम के ठाकुर एसके सिंह के मुताबिक इस मंदिर में भगवान शिव का रुद्राभिषेक भी हर तरह की मनोकामनाएं अवश्य ही पूरी करता है।

लक्ष्मी का वरदान हैं बेटियां, घर की शान है बेटियां सरस्वती का मान हैं बेटियां, धरती पर भगवान हैं

विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समय की मांग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर एक ज़माना था जब लिंग भेद अपनी चरम सीमा पर था और दुनियां के अनेक देशों में लिंग चयनात्मक गर्भपात का प्रचलन तेजी से बढ़ा था जिसके कारण लिंग अनुपात में तेजी से डिफरेंस बढ़ता चला गया,इस बीच दुनियां की सरकारें जागी और अनेक ऐसे कार्यक्रम, कानून नियम विनियम,व्यवस्थाएं जन जागरण अभियान चलाए गए जिससे इस कुप्रथा पर नकेल कस्ती चली गई,जो कुछ हद तक इस प्रथा पर नियंत्रण रखनेमें सरकारें कामयाब रही,परंतु फिर भी लिंग भेद की यह प्रथा वैश्विक स्तरपर पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है बल्कि चालू है, पर नियंत्रण में है। इसी क्रम एक दौर भारत में भी एक था,1994 से पहले का जब लिंग चयनात्मक गर्भपात अति तेजी के साथ हुआ था और अधिकतम लोग इस तर्ज पर बेटियों का गर्भ नष्ट कर देते थे, जिसमें स्त्री पुरुष अनुपात में भारी डिफरेंस हो गया इसके पश्चात सरकारें जागी व लिंग चयन प्रतिरोध अधिनियम 1994 बनाया जो 1 जनवरी 1996 को प्रवेश पूर्व निदान तकनीकी (विनियमन व दुरुपयोग निवारण) अधिनियम 1994 लागू किया गया जिसमें 14 फरवरी 2003 को संशोधन कर अधिनियम का नाम गर्भधारण पूर्व और प्रवेश पूर्व निदान तकनीकी (लिंग चयन प्रतिरोध) अधिनियम 1994 रखा गया।बता दें मेरा मानना है कि इस अधिनियम को लाने में देर हो गई थी जिसका परिणाम हम आज हर समाज व धर्म में भुगत रहे हैं क्योंकि,आज 1990 की उम्र के अनेक लड़के अनेक समाजों में हमारे बैठे हैं उस अनुपात में लड़कियां नहीं मिल रही है, क्योंकि आज लड़की वाले एज डिफरेंस की स्थिति को भी देख रहे हैं, इसलिए जो हमने 80- 90 के दशक में स्पीड से लिंग चयनात्मक गर्भपात किए थे उसके परिणाम आज उस उम्र के अनुपात में लड़कियों के नहीं मिलने से हो रहा है, जो मैंने प्रत्यक्ष रूप से इसका सटीक उदाहरण अनेक समाजों में देखा हूं। इसलिए ही भारत में भी राष्ट्रीय बेटी दिवस भी मनाया जाता है।और 22 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय बेटी दिवस भी मनाया जाता हैं अब हंस्ती है बेटियां तो मोती झड़ते हैं,चलती है लहराके तो फूल खिलते हैं। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समय की मांग है, व बेटे को प्राथमिकता देने की परंपराओं को समाप्त कर सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देना जरूरी है।

साथियों बात अगर करीब करीब अनेकों समाजों की करें तो जहाँ छोटी लड़कियों को अभी भी बोझ और लड़कों की तुलना में कम मूल्यवान माना जाता है।आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण बेटे को प्राथमिकता देना सदियों पुराना विचार है, फिर भी यह आज भी एक वास्तविकता है।भारत और चीन में लिंग-चयनात्मक गर्भपात का प्रचलन है,लेकिन इसे एशिया मध्य पूर्व, पूर्वी यूरोप और अन्य जगहों पर भी दर्ज किया गया है। इस उत्सव का उद्देश्य लड़कियों से जुड़े कलंक को पहचानना, बेटे को प्राथमिकता देने वाली परंपराओं को खत्म करना और सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देना है।डॉटर्स डे दुनियां भर में माता पिता और उनकी बेटियों के बीच अनोखे रिश्ते का सम्मान करने के लिए मनाया जाने वाला एक खास अवसर है।भारत में,परिवार और समाज में बेटियों के प्यार, सम्मान और महत्व को उजागर करता है।

साथियों बात अगर हम बेटियों के प्रति सहानुभूति पूर्वक और उत्साह से जनजागरण के 5 कारणों की करें तो (1) बेटियाँ परिवारों को पोषित करने और मजबूत भावनात्मक बंधन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।बेटियों की इस भूमिका का जश्न मनाने और परिवार इकाई में उनके योगदान को पहचानने का एक अवसर है। चाहे वह प्यार, देखभाल या जिम्मेदारी के माध्यम से हो,बेटियाँ एक विशेष ऊर्जा लाती हैं जो पारिवारिक जीवन को समृद्ध बनाती है।(2) इसका एक मुख्य उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है भारत में, सामाजिक मानदंडों ने अक्सर बेटों को बेटियों की तुलना में अधिक महत्व दिया है, जिससे महत्वपूर्ण लैंगिक असंतुलन पैदा होता है। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि बेटियाँ भी उतनी ही मूल्यवान हैं और उन्हें बेटों के समान ही प्यार, शिक्षा और अवसर दिए जाने चाहिए। यह भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण से लड़ने में मदद करता है और लिंग के बावजूद बच्चों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने के विचार को बढ़ावा देता है। (3) कई क्षेत्रों में, पारंपरिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं ने बेटों को प्राथमिकता दी है, खासकर विरासत और पारिवारिक वंश के संदर्भ में। बेटियों का दिन लड़कियों के महत्व और एक संपूर्ण जीवन के उनके अधिकार पर जोर देकर इन पुरानी मान्यताओं को चुनौती देता है। यह उत्सव परिवारों को अपनी बेटियों को उनके लक्ष्यों और सपनों को प्राप्त करने में सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करता है, चाहे वे व्यक्तिगत हों या पेशेवर।(4) बेटियों के प्रति जन जागरण सशक्तिकरण के बारे में भी है। यह माता पिता और अभिभावकों को अपनी बेटियों को यह याद दिलाने का मौका देता है कि वे मजबूत हैं, सक्षम हैं और दुनिया द्वारा दिए जाने वाले हर अवसर की हकदार हैं। बेटियों का दिन मनाकर, माता-पिता अपनी बेटियों में आत्मविश्वास पैदा कर सकते हैं, उन्हें अपने जुनून को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं और अपने लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। (5) माता-पिता और बेटी के बीच का रिश्ता अक्सर अपने गहरे भावनात्मक जुड़ाव के लिए संजोया जाता है। बेटियों के प्रति जन जागरण माता पिता को विचारशील इशारों, उपहारों या साथ में गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के माध्यम से इस बंधन को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है। चाहे वह एक साधारण दिल से की गई बातचीत हो, परिवार के साथ बाहर घूमना हो या कोई खास तोहफा हो, यह दिन बेटियों को यह दिखाने का सही अवसर प्रदान करता है कि वे परिवार के लिए कितना महत्त्वपूर्ण मायने रखती हैं।

साथियों बात अगर हम बेटियों के प्रति जन जागरण अभियान की करें तो, दुनियां के कुछ हिस्सों में, लड़के बच्चों को लड़कियों से ज्यादा महत्व दिया जाता है। यह जन जागरण अभियान लड़के और लड़की दोनों के लिए समान महत्व को बढ़ावा देता है।लड़कियों को शिक्षित किया जा सकता है और उन्हें समान अवसर दिए जाने चाहिए। अपनी बेटी का जश्न मनाएँ। अपनी बेटियों के साथ दिन बिताएँ। उन्हें आपको कुछ ऐसा सिखाने दें जो आप पहले से नहीं जानते। उनकी आकांक्षाओं को सुनें। चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, इस बात का इंतज़ार करें कि हमारी बेटियाँ हमको कहाँ ले जाएँगी। रोमांच हमारे सामने हैं। उत्सवों की तरह ही हमारी बेटियाँ भी कई तरह के व्यक्तित्वों वाली होती हैं।

जहाँ एक साहसी और साहसी होती है, वहीं दूसरी हमें पल भर में मात दे देती है। वे तुरंत हमारा दिल जीत लेती हैं। हमारी सहज प्रवृत्ति हमें उनकी रक्षा करने के लिए कह सकती है। हालाँकि, वे भी उतनी ही दृढ़ता से हमारी रक्षा करेंगी। बेटियाँ दुनिया के किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही बढ़ने, सीखने और खोज करने की समान हकदार हैं।

साथियों बात अगर हम बेटियों के बदलते सकारात्मक परिपेक्ष का सटीक उदाहरण दिनांक 19 सितंबर 2024 को राजस्थान में देखने की करें तो, गांव में राजस्थान जल महोत्सव को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया था इसमें मुख्य अथिति के तौर पर कलेक्टर टीना डाबी को आमंत्रित किया गया था, उनके स्वागत के लिए महिला सरपंच ने भाषण तैयार किया था। जब सरपंच नें स्टेज पर आई तो किसी आम राजस्थानी बहू की तरह अपना मुंह ढंके हुए थी। लेकिन घूंघट के पीछे से जब सरपंच ने फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना शुरु किया, तो सब हैरान रह गए। घूंघट में आई सरपंच के अंग्रेजी भाषण को सुनकर टीना डाबी भी हैरान रह गईं। पूरी स्पीच के दौरान उनके चेहरे पर स्माइल देखने को मिली। इसके बाद उन्होंने ताली बजाकर सरपंच का हौंसला बढ़ाया।अपनी स्पीच में महिला सरपंच ने जल के संरक्षण और महत्व के बारे में चर्चा की। सरपंच का ये भाषण सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। बता दें, एक समय था जब राजस्थान में महिलाओं को सिर्फ घर का चूल्हा-चौका करने लायक समझा जाता था, जैसे ही बेटी को अक्षर ज्ञान हो जाता था, उसे घर पर बिठा दिया जाता था। अब राजस्थान के कई गांवों में महिला सरपंच बनाई गई हैं।कई गांवों में महिलाएं सरपंच तो बन जाती हैं लेकिन उनके पति ही सारे कामकाज देखते हैं। लेकिन कुछ सरपंच ऐसी भी हैं, जो अपनी काबिलियत से गांव का नक्शा बदल कर रख दे रही हैं। उनकी सूझबूझ और समझदारी की तारीफ गांव वाले ही नहीं, उनसे मिलने वाले अधिकारी भी करते हैं। ऐसी ही एक सरपंच से हाल ही में बाड़मेर की नई कलक्टर टीना डाबी की मुलाकात हुई।एक शिरकत करने टीना डाबी बाड़मेर के जालीपा गांव गई थी,वहां एक ऐसी घटना हुई, जो लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि -हंसती है जब बेटियां तो मोती झड़ते हैं।लक्ष्मी का वरदान हैं बेटियां, घर की शान है बेटियां सरस्वती का मान हैं बेटियां, धरती पर भगवान हैं।विश्व में लिंग चयनात्मक गर्भपात के प्रचलन को जीरो टॉलरेंस पर लाना समयकी मांग।बेटे को प्राथमिकता देने कीपरंपराओं को समाप्त कर, सभी लिंगों के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देने को प्राथमिकता देना ज़रूरी है।

क्यों खराब होती है कार की क्लच प्लेट? ड्राइवर क्या करते है 4 गलतियां

परिवहन विशेष न्यूज

अगर कार ड्राइव के दौरान क्लच और गियर का सही से इस्तेमाल नहीं किया जाए तो उसका क्लच प्लेट जल्दी खराब हो सकता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको ऐसी 4 गलतियों के बारे में बता रहे हैं जिसे ड्राइवर कार ड्राइव के दौरान करते हैं। इन गलतियों की वजह से कार मालिक को बड़े नुकसान का सामना करना पड़ता है।

नई दिल्ली। पिछले कुछ वर्षों के मुकाबले हाल के समय में भारत की सड़कों पर कारों की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है। इसके बावजूद देश में एक्सपीरियंस ड्राइवर्स की कमी है। दरअसल, बहुत से ऐसे ड्राइवर है, जिन्होंने अपनी पहली कार खरीदी है। यह कार को ड्राइव करते वक्त कुछ मामूली गलतियां कर बैठते है, जिसका उन्हें आगे चलकर बड़े नुकसान का सामना करना पड़ता है वो है कार के क्लच प्लेट का खराब होना। इसे ठीक करवाने में मोटी रकम खर्च करनी पड़ती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कुछ ऐसी चीजों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको कार ड्राइव (driving mistakes) करने के दौरान एकदम नहीं करना चाहिए।

कार की क्लच प्लेट खराब होने के कारण

1. बेवजह न दबाएं क्लच प्लेट

अक्सर ड्राइव कार ड्राइविंग के दौरान अपना एक पैर ब्रेक और रेस के ऊपर रखते हैं और अपना दूसरा पैर क्लच के ऊपर रखते हैं। वहीं, ब्रेक और रेस वाला पैर तो जरूरत के हिसाब से शिफ्ट होता रहता है, लेकिन क्लच पर रखा हुआ पैर एक ही जगह पर टिका हुआ होता है। जिसकी वजह से क्लच हल्का सा दबा हुआ रहता है, इस वजह से कार की क्लच प्लेट के खराब (clutch plate failure) होने की वजह बढ़ जाती है।

2. आराम से करें गियर शिफ्ट

हमेशा गियर को आराम से शिफ्ट करना चाहिए। बहुत से ऐसे ड्राइवर होते हैं, जो कार को स्टार्ट करके पहला, दूसरा, तीसरे गियर में कार को चलाने के बजाय सीधे पांचवें पर शिफ्ट कर देते हैं। इतना ही नहीं, जब उन्हें कार को रोकना होता है तो वह पांचवें गियर से सीधा पहले गियर पर कार को शिफ्ट कर देते हैं। ड्राइवर के जरिए की जाने वाली इस गलती की वजह से कार के क्लच प्लेट के खराब (Car clutch damage) होने के चांसेस बढ़ जाते हैं। साथ ही गियरबॉक्स भी पूरा खराब हो सकता है।

3. एक साथ न दबाएं रेस और क्लच

हाल के समय में युवा लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचने के लिए कार के क्लच और रेस को एक साथ दबा देते हैं। ऐसा करने पर कार अपनी जगह पर ही खड़ी रहती है, लेकिन उससे जोर की आवाज भी आती है। कार से जोर की आवाज आने पर लोग उसकी तरफ देखने लगते हैं। भले में यह देखने में काफी कूल लगता हो, लेकिन इसका काफी बुरा असर कार के क्लच प्लेट पर पड़ता है।

4. कार की नियमित करें देखभाल

आपको अपनी कार का नियमित रूप से देखभाल करनी चाहिए। नियमित कार की देखभाल करने से उसका तेल और फिल्टर समय पर बदलता है, जो कार के इंजन के साथ ही क्लच प्लेट के लिए काफी लाभदायक होता है। इस वजह से आपकी कार की क्लच-प्लेट जल्दी खराब नहीं होती है।

बजाज पल्सर एनएस 125 वर्सेज टीवीएस रेडर 125: कीमत, इंजन और परफॉर्मेंस के मामले में किसे खरीदना बेस्ट

हाल ही में बजाज ऑटो ने Pulsar NS 125 के नए वेरिएंट LED BT ABS को भारत में लॉन्च किया गया है। इसका सीधा मुकाबला TVS Raider 125 के टॉप-एंड SX वेरिएंट से देखने के लिए मिलेगा। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल के कीमत इंजन और परफॉर्मेंस का कंपेरिजन बता रहे हैं।

नईदिल्ली। हाल ही में बजाज ऑटो ने Pulsar NS 125 के नए वेरिएंट LED BT ABS को लॉन्च किया है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 1,06,739 रुपये रखी गई है। यह एक स्पोर्टी कम्यूटर मोटरसाइकिल है, जिसका मुकाबला TVS Raider 125 के टॉप-एंड SX वेरिएंट से देखने के लिए मिलता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों मोटरसाइकिल (Bajaj Pulsar NS 125 Vs TVS Raider 125) के कंपेरिजन के बारे में बता रहे है कौन कीमत, इंजन और परफॉर्मेंस के मामले में बेहतर है।

1. कीमत

Bajaj Pulsar NS125: 1,06,739 रुपये (एक्स-शोरूम)

TVS Raider 125: 1,04,471 रुपये (एक्स-शोरूम)

2. डिजाइन

Bajaj Pulsar NS 125: इन दोनों मोटरसाइकिल के डिजाइन की बात करें तो दोनों ही स्पोर्टीनेस का फील देती है। Bajaj Pulsar NS12 ABS में पल्सर NS200 का सिल्हूट कै जैसा रखा गया है। यह स्पोर्टी स्टाइलिंग लंबे समय से चली आ रही है और अपने सेगमेंट में दूसरी बाइक के मुकाबले मेकओवर की जरूरत है। यह चार कलर ऑप्शन में आती है, जो काला, नीला, नारंगी और लाल है।

TVS Raider 125: यह भी स्पोर्ट कंप्यूटर बाइक है, जो स्पोर्टी फील देती है। इस बाइक को शार्प बॉडीलाइन के साथ आधुनिक और स्पोर्टी लुक दिया गया है। वहीं, इसे हाल ही में अपडेट भी किया गया है। यह तीन कलर ऑप्शन में आती है, जो फिएरी येलो, फोर्जा ब्लू और विकेड ब्लैक है। इसके नए डिजाइन को लोग काफी पसंद भी कर रहे हैं।

3. इंजन

Bajaj Pulsar NS125: इसमें 124.4cc, एयर-कूल्ड सिंगल सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 11.8 PS की पावर और 11 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

TVS Raider 125: इसमें 124.8cc, एयर-कूल्ड, सिंगल सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 11.38 PS की पावर और 11.2 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को भी 5-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

4. अंडरपिनिंग

Bajaj Pulsar NS125: इसमें टेलिस्कोपिक फोर्क और 5-स्टेप प्रीलोड एडजस्टेबल मोनोशॉक दिया गया है। इसमें 240mm का फ्रंट डिस्क और 130mm का रियर ड्रम ब्रेक और दोनों तरफ 17-इंच के अलॉय व्हील दिए गए हैं, जो ट्यूबलेस टायर के साथ आते हैं। इसमें सेफ्टी के लिए सिंगल-चैनल ABS दिया गया है। इसकी 805mm की सीट की ऊंचाई और वजन 144kg है।

TVS Raider 125: इसमें भी Pulsar NS 125 की तरह ही लिस्कोपिक फोर्क और 5-स्टेप प्रीलोड एडजस्टेबल मोनोशॉक, 240mm का फ्रंट डिस्क और 130mm का रियर ड्रम ब्रेक दिया गया है। साथ ही 17-इंच के अलॉय व्हील के साथ ट्यूबलेस टायर दिए गए हैं। इसमें SBT (सिंक्रोनाइज्ड ब्रेकिंग टेक्नोलॉजी) दी गई है। Raider में 780mm की सीट ऊंचाई और वजन 123kg है।

5. फीचर्स

Bajaj Pulsar NS125: इसमें LCD डिस्प्ले दिया गया है, जिसमें स्पीडोमीटर, टैकोमीटर, फ्यूल गेज, तात्कालिक फ्यूल इकोनॉमी की जानकारी मिलती है। इसके साथ ही कॉल और SMS अलर्ट के लिए ब्लूटूथ के जरिए स्मार्टफोन कनेक्टिविटी का भी फीचर दिया गया है। इसमें LED हेडलैंप दिया गया है।

TVS Raider 125: इसमें भी TFT डिस्प्ले दी गई है। इसमें कॉल और SMS अलर्ट, खेल और मौसम अपडेट और वॉयस असिस्ट के साथ टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन के लिए स्मार्टफोन कनेक्टिविटी दी गई है। बाइक में LED हेडलैंप, LED इंडिकेटर और टेल लैंप्स के साथ ऑल-LED लाइटिंग सेटअप दिया गया है। इतना ही नहीं, अंडरसीट स्टोरेज, साइड-स्टैंड कट-ऑफ, साइलेंट स्टार्ट सिस्टम और USB चार्जिंग पोर्ट जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसमें दो राइडिंग मोड भी दिए गए हैं।

क्या होता है एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम एबीएस, मोटरसाइकिल में किस तरह करता है काम

आजकल की मोटरसाइकिल कई एडवांस फीचर्स के साथ आती है। यह फीचर्स राइडिंग एक्सपीरिएंस को बेहतर करने के साथ ही राइडर की सुरक्षा भी बढ़ा देती है। इनमें एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम यानी ABS भी शामिल है। बाइक में इसके होने पर राइडर के फिसलने से लेकर गिरने तक का खतरा कम हो जाता है। हम यहां पर ABS कैसे काम करता है आपको बता रहे हैं।

नई दिल्ली। हाल के समय में आने वाली तकरीबन सभी मोटरसाइकिल काफी एडवांस हो गई है। इनमें ऐसे फीचर्स आने लगे हैं, जो राइडर के राइडिंग एक्सपीरियंस को बेहतर करने के साथ ही सेफ्टी भी बढ़ गई है। जिसमें एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम यानी ABS भी शामिल है, जो हर तरह की बाइक के लिए काफी जरूरी है। इसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आखिरकार ABS क्या है और यह मोटरसाइकिल में किस तरह से काम करती है।

क्या है ABS?

जब आप बाइक चलाते हैं और इस दौरान ब्रेक का इस्तेमाल करते हैं, तो ABS सिस्टम ही गाड़ी को फिसलने से रोकती है। जिस मोटरसाइकिल में यह फीचर होता है, फिर बाइक कितनी भी स्पीड में हो और अचानक ब्रेक लगाना पड़ जाए तो भी वह फिसलती नहीं है। यह फीचर ब्रेक लगने पर पहिए को लॉक होने से रोकता है और चालक का बाइक के हैंडल पर कंट्रोल बना रहता है। इस दौरान बाइक बिना फिसले और असंतुलित हुए दिशा बदल लेती है या फिर रुक जाती है।

कैसे काम करता है ABS?

एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम यानी ABS में तीन भाग होते हैं, जो ईसीयू किट, ब्रेक और व्हील स्पीड सेंसर है। इन तीनों को ही पिछले पहिए में लगाया जाता है। स्पीड सेंसर पहिए के लॉक अप की निगरानी करता है और इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट से जुड़ा हुआ होता है। यह इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट अचानक से ब्रेक लगाने पर पहिए को निश्चित दूरी तक रोल होने देता है और निश्चित अंतरात पर ब्रेक लगाता है। इसकी वजह से बाइक के फिसलने का खतरा बहुत कम हो जाता है। इसके साथ ही बाइक के स्क्रीन पर एक चेतावनी लाइट भी जलती है, जो दिखाता है कि ABS सिस्टम ठीक से काम कर रहा है या नहीं।

ABS के फायदे

इसकी वजह से गाड़ी को तेज ब्रेक लगाने पर भी कंट्रोल में रखने में मदद मिलती है।

इसकी वजह से तेज गति में भी ब्रेक लगाने पर बाइक स्किड नहीं होती है।

इमरजेंसी में ब्रेक लगाने पर बाइक की हैंडल को कंट्रोल रखने में मदद मिलती है।

इसकी वजह से गाड़ी के पहिए लॉक नहीं होते हैं और गाड़ी को कंट्रोल किया जा सकता है।

इसकी वजह से बाइक के टायरों के घिसने की संभावना कम रहती है।

इसकी वजह से बाइक को सीधी रेखा में रुकने में मदद करता है।

यह मोटरसाइकिल को कंट्रोल तरीके से स्पीड को कम करने में मदद मिलती है।

बेहतरीन फीचर्स के साथ आती हैं ये छह मिड साइज SUVs, सेफ्टी के लिए मिलता है ADAS, कीमत 15 लाख से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। इस सेगमेंट में कई ऐसे वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है जिनमें बेहतरीन फीचर्स को तो दिया ही जाता है साथ ही इनमें सेफ्टी का भी काफी ध्यान रखा जाता है। ऐसी कौन सी छह Mid Size SUVs हैं जिनको ADAS के साथ लाया जाता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में सबसे ज्यादा एसयूवी सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। इस सेगमेंट में कई निर्माताओं की ओर से बेहतरीन फीचर्स के साथ ही ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को भी ऑफर किया जाता है। MG से लेकर Honda तक कौन सी कंपनी की ओर से किस गाड़ी में इस फीचर को दिया जाता है। किस कीमत पर ADAS फीचर के साथ एसयूवी को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Elevate

जापानी वाहन निर्माता होंडा की ओर से ADAS जैसे सेफ्टी फीचर के साथ Honda Elevate SUV को लाया जाता है। कंपनी इस एसयूवी के टॉप वेरिएंट ZX में ADAS को ऑफर करती है। इस फीचर के साथ आने वाली Honda Elevate ZX को 15.41 लाख रुपये में खरीदा जा सकता है।

Hyundai Creta

हुंडई की ओर से मिड साइज एसयूवी के तौर पर क्रेटा को लाया जाता है। अपने सेगमेंट में इस एसयूवी को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। एसयूवी को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ही ADAS जैसे सेफ्टी फीचर के साथ लाया जाता है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी के SX Tech वेरिएंट से ADAS को ऑफर किया जाता है। इस फीचर के साथ एसयूवी को 16.09 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Mahindra Thar Roxx

महिंद्रा की ओर से थार रॉक्स को भी 2024 में लॉन्च किया गया था। बाजार में इस एसयूवी को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लाया गया है। लॉन्च के बाद से ही इसे काफी पसंद किया जाता है। एसयूवी में सेफ्टी के लिए ADAS को भी दिया गया है। इस फीचर के साथ एसयूवी के AX3L और ऊपर के वेरिएंट्स में ऑफर किया जाता है। जिसे 16.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Kia Seltos

किआ की ओर से सेल्टॉस को मिड साइज एसयूवी के तौर पर लाया जाता है। इस एसयूवी में भी कंपनी ADAS को ऑफर करती है। एसयूवी के GTX+ वेरिएंट को इस सेफ्टी फीचर के साथ लाया जाता है। जिसे 19.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Tata Harrier

टाटा की ओर से हैरियर को भी मिड साइज एसयूवी के तौर पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की इस एसयूवी के Adventure +A वेरिएंट में ADAS को ऑफर किया जाता है। इस सेफ्टी फीचर के साथ एसयूवी को 22.05 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

MG Hector

एमजी की ओर से हेक्टर एसयूवी को भी मिड साइज एसयूवी के तौर पर लाया जाता है। कंपनी की इस एसयूवी के Savvy Pro वेरिएंट में ADAS को लाया जाता है। एसयूवी के ADAS वेरिएंट को खरीदने के लिए 22.88 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत देनी होगी।

जावा 350 लीगेसी एडिशन वर्सेज रॉयल इनफील्ड क्लासिक 350: इंजन, फीचर्स और परफॉर्मेंस में कौन बेस्ट

Jawa 350 Legacy Edition VS Royal Enfield Classic 350 Comparison जावा 350 लेगेसी एडिशन और रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 दोनों ही शानदार मोटरसाइकिल है। यह दोनों ही दमदार इंजन फीचर्स और परफॉर्मेंस के साथ आती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों बाइक की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि दोनों में कौन इंजन फीचर्स और परफॉर्मेंस के मामले में बेस्ट है।

नई दिल्ली। हाल ही में मोटरसाइकिल बनाने वाली कंपनी जावा ने Jawa 350 Legacy Edition को पेश किया है। इसका मुकाबला भारतीय बाजार में Royal Enfield Classic 350 से देखने के लिए मिलेगा। यह दोनों ही बाइक रेट्रो क्लासिक मोटरसाइकिल है। यह होनों बाइक ही कई बेहतरीन फीचर्स और दमदार इंजन के साथ आती है। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि यह दोनों (Jawa 350 Legacy Edition VS Royal Enfield Classic 350 Comparison) बाइक इंजन, फीचर्स, सस्पेंशन और ब्रेक्स के मामले ज्यादा दमदार कौन है।

1. कीमत (Price)

Jawa 350 Legacy Edition: 1,98,950 रुपये (एक्स-शोरूम दिल्ली)

Royal Enfield Classic 350: 1,99,500 रुपये (एक्स-शोरूम दिल्ली)

2. डिजाइन (Design)

Jawa 350 Legacy Edition: इसका डिजाइन पुरानी जावा मोटरसाइकिल से प्रेरित है। इसका फ्यूल टैंक और पैनल को काफी बेहतरीन तरीके से डिजाइन किया गया है। इसमें एक्स्ट्रा फीचर्स के रूप में ऊंचा फ्रंट विज़र और पिलियन बैकरेस्ट दिया गया है।

Royal Enfield Classic 350: इसका डिजाइन काफी अट्रैक्टिव और रेट्रो है। इसमें दिया गया टियर-ड्रॉप शेप का मेटल टैंक और मेटल पैनल इसे स्पेशल लुक देते हैं। इसका डिजाइन 2008 में लॉन्च हुई क्लालिक से काफी मिलता-जुलता है।

तुलना: डिजाइन के मामले में रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 ज्यादा पॉपुलर है। वहीं, जावा 350 लेगेसी एडिशन में मॉडर्न ट्विस्ट्स जैसे पिलियन बैकरेस्ट और फ्रंट विजर दिया गया है, जो इसे थोड़ा अलग और अट्रैक्टिव बनाते हैं।

3. इंजन (Engine)

Jawa 350 Legacy Edition: इसमें 334cc का सिंगल-सिलेंडर लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 22.5PS की पावर और 28.1Nm टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

Royal Enfield Classic 350: इसमें 349cc का सिंगल-सिलेंडर एयर-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 20.4PS की पावर और 27Nm टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

तुलना: जावा 350 लेगेसी एडिशन का इंजन पावर और टॉर्क के मामले में क्लासिक 350 से आगे निकल जाती है। वहीं, इसमें 6-स्पीड गियरबॉक्स भी मिलता है, जिसकी वजह से यह बेहतर परफॉर्मेंस देती है।

4. सस्पेंशन और ब्रेक्स (Suspension and Brakes)

Jawa 350 Legacy Edition: इसमें 35mm टेलीस्कोपिक फोर्क और ड्यूल रियर शॉक्स दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए 280mm फ्रंट और 240mm रियर डिस्क ब्रेक सेटअप और ड्यूल चैनल ABS दिया गया है।

Royal Enfield Classic 350: इसमें 41mm टेलीस्कोपिक फोर्क और ट्विन रियर शॉक्स दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए बाइक में 300mm फ्रंट और 270mm रियर डिस्क ब्रेक सेटअप मिलता है।

तुलना: क्लासिक 350 में ब्रेक्स थोड़े बड़े मिलते हैं, जो ब्रेकिंग पर थोड़ी बढ़त बना देते हैं। वहीं, जावा 350 में ड्यूल चैनल ABS दिया गया है, जो ब्रेकिंस सिस्टम को प्रभावी बना देते हैं।

5. फीचर्स (Features)

Jawa 350 Legacy Edition: इसमें एनालॉग स्पीडोमीटर दिया गया है, जिसमें डिजिटल इंसैट, ओडोमीटर, ट्रिप जानकारी और फ्यूल इंडिकेटर जैसी जानकारी देता है। इसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन जैसे फीचर्स से भी लैस किया गया है।

Royal Enfield Classic 350: इसमें भी एनालॉग स्पीडोमीटर का इस्तेमाल किया गया है, जो ओडोमीटर, ट्रिप जानकारी, इको इंडिकेटर, गियर पोजीशन इंडिकेटर और फ्यूल इंडिकेटर जैसी जानकारी देता है। इसके अलावा, ट्रिपर नेविगेशन, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन का भी फीचर मिलता है।

तुलना: रॉयल एनफील्ड क्लासिक 350 में इको इंडिकेटर, गियर पोजीशन इंडिकेटर और ट्रिपर नेविगेशन जैसे फीचर्स ज्यादा मिलते हैं, जो जावा 350 के मुकाबले एक बड़ा फायदा देती है।

इंटरनेट हिन्दी के लिए भविष्य का सर्वाधिक सक्रिय मीडिया

विजय गर्ग

इंटरनेट संसाधित भाषा शिक्षण को बढ़ावा देने में भारत सरकार द्वारा हुआ यह प्रयास महत्वपूर्ण माना जाता है। फिर भी भाषा अध्यापकों के लिए कम्प्यूटर के माध्यम से भाशा सिखाना आज भी कठिन कार्य बना है। भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक हार्डवेयर और सॉटवेयर की उपलब्धता आज भी आवश्यकता के अनुसार नही हो रही है। इस स्थिति को नकारा नही जा सकता। कम्प्यूटर द्वारा गणित भौतिकी रसायन शास्त्र आदि विशय सिखाना सख्त है, क्योकि इन विषयों में किसी भी अध्यापक द्वारा पढ़ाई जाने वाली सामग्री प्रायः पूर्वनिर्धारित होती है। पर कम्प्यूटर के द्वारा भाषा सिखाना एक अत्याधिक जटिल कार्य है। भाषा सिखाना वास्तव में कौशल सिखाना है। लिखना व पढ़ना जैसा गौण कौशल अथवा नियमों पर आधारित व्याकरण आदि जैसा विषय तो फिर भी आधारभूत मूल सामान्य कम्प्यूटर से सिखाए जा सकते है, पर मौखिक और श्रवण कौशल सिखाना असंभव नही, तो दुश्कर अवश्य है।

भारत इंटरनेट, सूचना क्रान्ति और कम्प्यूटिंग प्रोग्रेसिंग में शीर्ष पर है।

भारत में जन सामान्य के लिए इंटरनेट सेवा का आरम्भ 15 अगस्त, 1995 को विदेश संचार लिमिटेड द्वारा किया गया। इंटरनेट एक ऐसा विश्वव्यापी कम्प्यूटर नेटवर्क है, जो दुनिया भर में फैला है, लेकिन उस पर न तो किसी का नियंत्रण है, और न ही वह किसी कानूनी दायरे में आता है।

आधुनिक संचार माध्यम भी 'रीमिक्स' भाषा से अछूता नही रह सका। हिन्दी भाषा का यह रीमिक्स भाषायी आयाम अनेक प्रश्नों को विवादों को जन्म तो दे रहा है, साथ ही साथ हिन्दी भाषा का यह चेहरा बदलते तकनीकि जगत में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल हुआ है। इसे नकारा नही जा सकता।

इंटरनेट की, संचार-प्रक्रिया में अपनी भूमिका है। हिन्दी भाषा के प्रसार-प्रचार में भी 'इंटरनेट' का स्थान महत्वपूर्ण एवं दृष्टिगोचर होता है। कहना सही होगा कि संचार प्रक्रिया में अर्थपूर्ण विचारों का आदान-प्रदान करने हेतु इंटरनेट का सही उपयोग हो रहा है। 'इंटरनेट' के माध्यम से देवनागरी में यांत्रिक सुविधाओं तथा नवीनतम द्वि भाषी शब्द संसाधक प्रणाली का विकास हो रहा है। विडोंज पर आधारित देवनागरी फॉण्ट उपलब्ध हो रहे है। अक्षर – प्र मल्टीवर्ड, शब्दमाला, शब्दरत्न सुपर, अलिशा, ए0एल0पी0, विजन, वड्र्सवर्थ, भाषा, शब्द सम्राट, आकृति आदि द्वि भाषी शब्द संसाधकों की जानकारी इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी प्रेमियों को मिलने के कारण हिन्दी भाषा विकास को नई दिशा मिल रही है। 'इंटरनेट' टेलीफोनी के माध्यम से भी प्रचुर मात्रा में हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार विदेशों में हो रहा है। साहित्यकारों के लिए अधिकतम ज्ञान प्राप्त करने हेतु इंटरनेट उपयुक्त सिद्व हो रहा है। विभिन्न भारतीय भाषाओं का साहित्य हिन्दी के माध्यम से पाठकों तक पहुॅचाने का कार्य इंटरनेट के माध्यम से सुविधाजनक हो रहा है। वर्तमान समय में हिन्दी भाषा के अनुसंधानात्मक विकास में अनुसंधान क्षेत्र में नई दिशा देने में 'इंटरनेट' की भूमिका महत्वपूर्ण दृष्टिगोचर होती है। इंटरनेट के माध्यम से मानव के ज्ञान में तीव्रता से वृद्वि होती है। इंटरनेट पर एक सवाल का जवाब खोजने के सिलसिले में कई दूसरे तरह का ज्ञान भी प्राप्त हो जाता है। जो अचानक ही खोज के दौरान जाहिर होते है। इंटरनेट की भाषा में इसे 'सिरेनडिपिटी' (आकस्मिक लाभवृत्ति) कहा जाता है। हिन्दी भाषा के विकास में इस आकस्मिक लाभवृत्ति का उपयोग हो रहा है। हिन्दी परिभाषिक शब्दों को सीखने हेतु अब इंटरनेट का प्रयोग हो रहा है। भले ही यह परिभाषिक शब्दावली हिन्दी व्याकरण के नियम तोड़ रही हो, इसमें अंग्रेजी शब्दों का प्राचुर्य हो, फिर भी इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी का जो सर्वथा भिन्न रूप सामने आ रहा है, इस रूप को हिन्दी पाठक अपना रहा है।

समकालीनता का विचार किया जाय, तो इंटरनेट के प्रति लोगों का आकर्षण दिन व दिन बढ़ता जा रहा है। उपयोगकर्ताओं को जिन शब्दों में 'ज्ञान' की आवष्यकता है, उन्ही शब्दों में ज्ञान दियाजा रहा है और यह ज्ञान प्रचलित शब्दों में होने के कारण समकालीन पीढ़ी इंटरनेट की 'भाषा' पर आपत्ति नही उठा रही है। अतः इंटरनेट पर आ रही हिन्दी भाषा पर विवाद उठाने के बजाय इंटरनेट के लिए 'व्यावसायिक उद्देश्य' पूरा करने वाले हिन्दी शब्द का निर्माण करना हिन्दी भाषा की पुरानी इंटरनेटीय दिशा में अग्रेसित होना चाहिए। वर्तमान समय में हमें इंटरनेट के लिए 'स्वतन्त्र' हिन्दी भाषा का निर्माण करना होगा।

अतः हिन्दी शब्दों का मानकीकृत रूप इंटरनेट में लाने के लिए व्यापक स्तर पर अनुसंधान होना अनिवार्य है। डॉ0 अवधेश सिंह कहते है- 'लाइनक्स नामक एक नया ऑपरेटिग सिस्टम इसी दिशा में अधुनातन पहल है। यह इंटरनेट पर अंतक्रिया करने वाले हजारों प्रोग्रामरों का सहयोगात्मक प्रयास है, जिसमे तकनीकि शब्दों को ही नही, आम जीवन के शब्दों को भी एक मानक रूप देकर प्रचलित करने की चेष्टा की जा रही है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि हिन्दी शब्दों और उसके रूपों को मानकीकृत करने का काम हिन्दी वालो द्वारा किया जाता है, तो ऐसा नही है कि यह काम रूका रहेगा। बहुराष्ट्रीय कम्पनियॉ इस काम को अपने हाथ में ले लेगी। ऐसा वे हिन्दी के प्रति स्नेह के आवेश में नही, बल्कि अपना माल बेचने के लिए करेगी।

कहना आवश्यक नही कि अपना व्यावसायिक उद्देश्य पूरा करने के लिए काम चलाउ हिन्दी को विकसित करने का प्रयास हो रहा है। इसे रोकना होगा। इंटरनेट के लिए 'हिन्दी' का मानक कोश निर्माण करने की जिम्मेदारी समकालीन पीढ़ी की है।'' संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रमोचित हिन्दी सॉटवेयर उपकरण ;भ्पदकप वजिूंतम ज्वबसेद्ध विकसित किया गया है, जिसमें हिन्दी भाषा के यूनीकोड आधारित ओपन टाईप फॉन्ट्स, कीबोर्ड, ड्राइवर हिन्दी भाषा के शब्द वर्तनी जॉचकर्ता, हिन्दी, भाषा का शब्दानुवाद टूल आदि विषयों की जानकारी प्राप्त होती है।

इंटरनेट संसाधित भाषा शिक्षण को बढ़ावा देने में भारत सरकार द्वारा हुआ यह प्रयास महत्वपूर्ण माना जाता है। फिर भी भाषा अध्यापकों के लिए कम्प्यूटर के माध्यम से भाशा सिखाना आज भी कठिन कार्य बना है। भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक हार्डवेयर और सॉटवेयर की उपलब्धता आज भी आवश्यकता के अनुसार नही हो रही है। इस स्थिति को नकारा नही जा सकता। कम्प्यूटर द्वारा गणित भौतिकी रसायन शास्त्र आदि विशय सिखाना सख्त है, क्योकि इन विषयों में किसी भी अध्यापक द्वारा पढ़ाई जाने वाली सामग्री प्रायः पूर्वनिर्धारित होती है। पर कम्प्यूटर के द्वारा भाषा सिखाना एक अत्याधिक जटिल कार्य है। भाषा सिखाना वास्तव में कौशल सिखाना है। लिखना व पढ़ना जैसा गौण कौशल अथवा नियमों पर आधारित व्याकरण आदि जैसा विषय तो फिर भी आधारभूत मूल सामान्य कम्प्यूटर से सिखाए जा सकते है, पर मौखिक और श्रवण कौशल सिखाना असंभव नही, तो दुश्कर अवश्य है।

वर्तमान समय का विचार किया जाय तो वर्तनीशोधक, कम्प्यूटर काश रूपात्मक और वाक्यात्मक विश्लेशक, स्पीच सिंथे साइजर, रिकगनाइजर, डिकोटर आदि की उपलब्धता के कारण इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा शिक्षण सुदूर पहुँच रहा है। इंटरनेट मे दिन व दिन बदलाव, भाशाई सुधार होकर हिन्दी भाषा शिक्षण पिछड़ी दशा में उभरकर नई दिशा की ओर अग्रसित हो रहा है। इसे हमे मानना होगा। हिन्दी भाषा के विकास हेतु नवीनतम टैक्नॉलॉजी विज्ञान के साथ सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय स्तर पर यह प्रयास होना जरूरी है कि हिन्दी भाषा को व्यवहार एवं प्रयोग के स्तर पर सार्वदेशिक बनाया जाये। अतः यह बात तब संभव है जब समकालीन पीढ़ी इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा शिक्षण को नई दिशा दें। हिन्दी के विकास की यह प्रक्रिया जितनी तेज रतार से होगी, उतना ही हमारा और हमारे देश का विकास होगा। इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी भाषा को वैज्ञानिक, तकनीकी, यांत्रिकी, प्रौद्योगिकी आदि विशयों के साथ जोड़कर हिन्दी भाषा की सुदीर्ध परम्परा को और अधिक समृद्व बनाना होगा। समकालीन पीढ़ी के कम्प्यूटर विज्ञ तथा भाषाविज्ञ दोनो को एक साथ मिलकर हिन्दी भाषा विकास में इंटरनेट जैसे आधुनिक जनसंचार माध्यम की भूमिका को ध्यान में रखकर निरन्तर कार्यरत रहना होगा। तभा हिन्दी भाषा के विकास में इंटरनेट के माध्यम से नई दिशा प्राप्त होगी।

हिन्दी भाषा विकास में इंटरनेट जैसे आधुनिक जनसंचार माध्यम की भूमिका के सिंहावलोकन से यह स्पष्ट है कि इंटरनेट हिन्दी भाषा विकास में सर्वाधिक प्रभावी माध्यम बना रहा है। इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी पत्र पत्रिकाऍ, नवीनतम सूचनाएं पुस्तके हमे प्राप्त हो रही है। अतः हिन्दी भाषा विकास में इंटरनेट दिशा दर्शक बनता नजर आ रहा है। हम हिन्दी भाषा को इंटरनेट के माध्यम से जितनी जीवनोपयोगी, व्यवसाय मूलक बनाने की दृष्टि से विकसित करेंगें, उतनी जल्दी समृद्व और शक्तिमान भाषा बनकर विश्व के सामने आयेगी। सरकारी, सार्वजनिक, व्यक्तिगत, स्कूलो, कॉलेजो मे व्यापक तौर पर यदि हिन्दी भाषा विकास के लिए इंटरनेट का प्रयोग किया जाएगा, तो हिन्दी अतंता विश्व मंच पर अपनी अलग पहचान बनायेगी।

आज सूचनाक्रान्ति ने एकांगी भूमिका में अवतरित होकर बहुराष्ट्रीयकरण के द्वारा स्थानीय बाजारों पर साम्राज्यवादी शक्तियों के आधिपत्य का दरवाजा खोलकर भूमंडलीकरण की आवधारण को साकार कर दिया है। भूमंडलीय मीडिया बाजार में हिन्दी की प्रगति और विकास का मानक संख्या बल है। कितने टी0वी0 चैनल, कितने अखबार, कितनी फिल्में, कितनी साइट आदि आदि। हिन्दी के समाचार पत्रों में हिन्दी के आकलन पर प्रकाशित लेख और संपादकीय टिप्पणियों के शीर्षक विश्व बाजार से हिन्दी के गठबंधन की बेहद आश्वस्त तस्वीरे खींचते है – खुद मॉझी ही हिन्दी डुबोए पर बढ़ता बाजार उसे बचाए, मार्केट फ्रैडली हिंन्दी 'बॉलीवुड का हिन्दी प्रेम' तथा 'हिन्दी का मछली बाजार'।

इसमें कोई संदेह नही कि मीडिया, मंडी हिन्दी बढ़त लेती प्रतीत होती है। वह आज मनोरंजन उद्योग, समाचार मीडिया की सबसे बड़ी माध्यम भाषा बनी हुई है।

'हिन्दी ने उच्च प्रौद्योगिकी से उपलब्ध यांत्रिक उपकरणों के साथ अपना तालमेल बैठा लिया है। विश्व विख्यात माइक्रोसॉट आई0बी0एम0 और गूगल जैसी चोटी की बहुराष्ट्रीय कम्पनियॉ हिन्दी की ओर रूख कर चुकी हैं।

डिजिटल मीडिया अपनी इस भूमिका को कैसे निभा सकता है ? इस प्रश्न पर विचार करते समय हमें यह देखना होगा कि डिजिटल मीडिया जिस कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचेगी उसे सर्व सुलभ बनाया जाए। इस दिशा में भारत सरकार ने नई शुरूआत की है – डिजिटल इंण्डिया की घोषणा करके। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सरकार ने देश की जनता को इंटरनेट की सुविधा सर्वत्र सुलभ कराई है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव से स्वयं को बचाए तथा डिजिटल मीडिया को भारतीय भाशाओं के माध्यम से शक्ति प्रदान करें। भाषा केवल वर्ण या शब्दों का समूह नही होती, भाषा का सीधा संबंध हमारी सोच, हमारी संस्कृति से, जीवन मूल्यों से होता है। अपनी भाषा एवं संस्कृति को खोकर किया गया कोई भी भौतिक विकास या सांसारिक उपलब्धि – सोना खोकर पीतल प्राप्त करने जैसी है।

कहा जा सकता है कि भारत के नव-निर्माण की गूॅज आज पूरे विश्व में सुनाई देने लगी है। इस नव-निर्माण के लिए विश्व में विद्यमान आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान और तकनीक को भारत मे लाना, अपनाना और इसका पूरा सदुपयोग करना अत्यावश्यक है। हम दुनिया को अपनी दृष्टि से देखे, न कि दूसरों की दृष्टि से स्वयं को देखे। शायर ने कहा है –

''क्यो देखे जिन्दगी को, किसी की नजर से हम',
अपने पास अपनी, फकत इक नजर तो है।''

मीडिया के इस स्वरूप तथा इसके विभिन्न आयामो का अध्ययन करते हुए हम यह देख सकते है कि पिछले एक दशक में इसके द्वारा हिन्दी के विकास क्रम में एक क्रान्तिकारी बदलाव आया है। हिन्दी को विश्व के कोने-कोने मे पहुॅचाकर पूरे विश्व को एक कुनबे के रूप में परिवर्तित किया है।

इस पूरे लेख के माध्यम से हमने देखा कि इंटरनेट तकनीक, किस तरह जन-संचार एवं प्रसारण माध्यम से विविध आयामों द्वारा आज एक विश्वव्यापी सूझबूझ का संचार बना रहे है, जो मानव विकास की नई कथा कह रहा है।

इंटरनेट पर हिन्दी अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है। हिन्दी की वेबसाइटों की संख्या जिस अनुपात में बढ़ रही है उसी अनुपात मे इसके पाठकों की संख्या भी बढ़ रही है। ढ़ेरो तकनीकि सुधारो और लिखावट के तरीके में बदलाव, आने से इंटरनेट पर हिन्दी का प्रयोग करने वालों की सख्या पर भी अब असर पड़ा है।

'गद्य, पद्य और साहित्य से लदी हुई हिन्दी की आम छवि डिजिटल जगत में तेजी से बदलती दिख रही है। हिन्दी अपने नए अवतार में युवाओं के एक वर्ग को कूल लगती है।''

कम्प्यूटर पर भाषाओं की जानकारी रखने वाले कहते है कि अब अंग्रेजी से ज्यादा हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाशाये फल-फूल रही हैं

इंटरनेट पर ब्लागिंग ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान दिया। आज कोई भी व्यक्ति अपने नाम से ब्लॉग लिखकर अपने विचार रख सकता है। इंटरनेट की सबसे बड़ी कम्पनी गूगल के भारत के प्रमुख राजन आनन्द ने बीते दिनों तक साक्षात्कार में कहा '' इंटरनेट पर अगले 30 करोड़ नए यूजर्स अंग्रेजी मे नही, बल्कि भारतीय भाषाऍ बोलने वाले आएंगे। मैथलीशरण जी ने कहा, ''इंटरनेट पर हिन्दी को सबसे अधिक फायदा पहुँचाया अखबारों की वेबसाइटों ने, जिन्होंने लोगों को खूब जोड़ा।''

वैश्विक सभ्यता में कम्प्यूटर, इंटरनेट के दौर में हमारी हिन्दी आधुनिक बने, इसके लिए आधुनिक प्रयोजन के अनुकूल विकास जैसी कुछ वैज्ञानिक शर्तें पूरी करना आवश्यक है। जिसे इंटरनेट के द्वारा पूर्ण किया जा सकता है। आधुनिक युग में कम्प्यूटर के इंजीनियरों का कहना है कि देवनागरी वर्णमाला का जो क्रम है, वह केवल वैज्ञानिक ही नही बल्कि उसमें कम्प्यूटर के प्रोग्राम आसानी से सिद्व होते है। स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से यह वैज्ञानिक और सहज वर्णमाला है। इंटरनेट हिन्दी के लिए भविष्य का सर्वाधिक सक्रिय मीडिया होगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े हुए हैं प्रदर्शन कलाएँ और रंगमंच

मजदूर वर्ग को आजाद कराने और स्थापित सत्ता के खिलाफ क्रांति को मजबूत करने के लिए 20वीं सदी की शुरुआत में नुक्कड़ नाटक का विकास हुआ। इसकी शुरुआत मुख्य रूप से उपनिवेशवाद विरोधी युग के दौरान भारत में वामपंथी रंगमंच कार्यकर्ताओं द्वारा की गई थी। यद्यपि नुक्कड़ नाटक और लोक नाटक में कई समानताएँ हैं, लेकिन नुक्कड़ नाटक एक सीधा-सादा कलात्मक माध्यम होने के बजाय एक सहभागी सामाजिक संचार प्रक्रिया है। इस निबंध में सामुदायिक विकास के एक उपकरण के रूप में नुक्कड़ नाटक के कार्य और क्षमता की जांच की गई है, जो सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहता है। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद, थिएटर उद्योग में महत्त्वपूर्ण उथल-पुथल हुई। अधिक लोकप्रिय फ़ल्मि शैलियों से प्रतिस्पर्धा ने मनोरंजन थिएटर उद्योग को नुक़सान पहुँचाया। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बंगलौर जैसे प्रमुख शहरों में शौकिया रंगमंच का विकास हुआ।

डॉ सत्यवान सौरभ

जैसे-जैसे क्षेत्रीय नाट्य परम्पराएँ विकसित हुई हैं, भारत का रंगमंच और प्रदर्शन कलाएँ सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक रही हैं। न्याय को बढ़ावा देने, सत्ता का विरोध करने और सामाजिक अन्याय की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए रंगमंच एक सशक्त माध्यम साबित हुआ है। बढ़ते क्षेत्रीय राष्ट्रवाद, राष्ट्र का प्रश्न और उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की जटिल कथाओं ने क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं के विकास को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, बंगाली नाटक नील दर्पण (1860) में बताया गया कि ब्रिटिश शासन के दौरान नील की खेती करने वाले किसानों का किस प्रकार शोषण किया जाता था। आधुनिक रंगमंच सांस्कृतिक उत्पादन के औपनिवेशिक मॉडलों और पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रतिच्छेदन ने आधुनिक रंगमंच को आकार दिया है। रंगमंच सहित प्रदर्शन कलाएँ सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए एक सशक्त साधन तथा चर्चा के लिए एक जीवंत मंच बनी हुई हैं। रंगमंच लंबे समय से भारत में जागरूकता बढ़ाने, सुधार और प्रतिरोध के लिए एक सशक्त साधन रहा है, जिसका प्रभाव राजनीतिक आंदोलनों के साथ-साथ सामाजिक संरचनाओं पर भी पड़ा है। शास्त्रीय रीति-रिवाजों से लेकर समकालीन नुक्कड़ नाटकों तक, इसने सामाजिक बदलावों को प्रतिबिंबित करने और प्रभावित करने के लिए कभी भी बदलाव करना बंद नहीं किया है। सामाजिक अन्याय को लंबे समय से रंगमंच के माध्यम से प्रकाश में लाया जाता रहा है।

ब्रिटिश शासन के दौरान नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण को 1860 में बंगाली थियेटर के नील दर्पण द्वारा सार्वजनिक किया गया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को बड़े पैमाने पर नाटकों और लोक प्रदर्शनों के माध्यम से संगठित किया गया था। रंगमंच के माध्यम से, भारतीय जन रंगमंच संघ (इप्टा) ने 1943 में उपनिवेशवाद विरोधी भावना को बढ़ावा दिया। निम्न वर्ग के समुदाय रंगमंच के माध्यम से अपनी पहचान व्यक्त करने में सक्षम रहे हैं। दलित सशक्तिकरण और अम्बेडकरवादी दर्शन को भीम नाट्य (महाराष्ट्र) द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। रंगमंच का उपयोग भ्रष्टाचार को उजागर करने और नीतियों की आलोचना करने के लिए किया गया है। 1980 के दशक में, सफ़दर हाशमी के जन नाट्य मंच ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए जिनमें सरकारी नीतियों की आलोचना की गई; इसके कारण 1989 में उनकी हत्या कर दी गई। कानून और सामाजिक सुधार रंगमंच से प्रभावित हुए हैं। विजय तेंदुलकर की 1972 में प्रकाशित पुस्तक सखाराम बाइंडर में महिलाओं के अधिकारों और घरेलू दुर्व्यवहार के खुलासे पर चर्चा के परिणामस्वरूप सख्त सेंसरशिप कानून बनाये गये। धार्मिक और सामाजिक परंपराएँ: प्राचीन रंगमंच की मज़बूत धार्मिक और सामाजिक जड़ें थीं। कुटियाट्टम (केरल), जिसे 2001 में यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई थी, अभी भी संस्कृत रंगमंच की परंपराओं को क़ायम रखे हुए है। लोक रंगमंच के माध्यम से सामाजिक टिप्पणी: वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को लोक परंपराओं में प्रतिबिंबित किया गया है।

नक्सलवादी आंदोलन के दौरान वर्ग संघर्ष को जत्रा (बंगाल) में दर्शाया गया। आधुनिक रंगमंच में मानवाधिकार, लोकतंत्र और भ्रष्टाचार नए विषय बन गए। 1950 के दशक में हबीब तनवीर के नया थिएटर ने लोक और आधुनिक विषयों को मिलाकर सामाजिक मुद्दों को चित्रित किया। राज्य हस्तक्षेप और सेंसरशिप: राजनीतिक रूप से संवेदनशील नाटकों पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाए जाते हैं। विजय तेंदुलकर की 1972 की फ़ल्मि घासीराम कोतवाल को जाति आधारित भ्रष्टाचार और शोषण को उजागर करने के कारण प्रतिबंधित कर दिया गया था। डिजिटल प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता ने थिएटर के प्रभाव और पहुँच को बढ़ा दिया है। सामाजिक सक्रियता के लिए, यूट्यूब आधारित थिएटर समूह, जैसे जन नाट्य मंच, डिजिटल प्रदर्शनों का उपयोग करते हैं। भारत और विदेश के सरकारी और निजी स्रोतों ने स्वतंत्रता के बाद से भारतीय रंगमंच को इसके अनेक रूपों में सहयोग दिया है, लेकिन यह हमेशा विशिष्ट प्रतिभाओं द्वारा संचालित रहा है और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित रहा है, साथ ही स्वदेशी संसाधनों की ओर भी मुड़ता रहा है। इस अवधि के दौरान विजय तेंदुलकर, बादल सरकार, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश और गिरीश कर्नाड, चंद्रशेखर कंबार, पी लंकेश और इंदिरा पार्थसारती जैसे आधुनिकतावादी नाटककार पैदा हुए; उनके

नाटकों का उपयोग और अध्ययन पूरी दुनिया में किया गया है।

इन नाटककारों ने थिएटर में आधुनिकतावादी आक्रोश पर गहन औपचारिक कठोरता और विषयगत ध्यान केंद्रित किया। पहचान का संकट और वैश्वीकरण के परिणाम उन विषयों में से हैं जिन पर युवा लेखक वर्तमान में कई स्थानों पर चर्चा कर रहे हैं। आधुनिक भारतीय रंगमंच मुख्यतः तीन परंपराओं से प्रभावित है: संस्कृत रंगमंच, लोक रंगमंच और पश्चिमी रंगमंच। वास्तव में, तीसरा वह है जिसे आज भारतीय रंगमंच की आधारशिला माना जा सकता है। हम सभी देख सकते हैं कि समय के साथ रंगमंच और प्रदर्शन कलाएँ किस प्रकार विकसित हुई हैं, उन्होंने सत्ता को चुनौती दी है, न्याय को बढ़ावा दिया है, तथा सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया है। आज, पूरे देश में कई थिएटर समूह और निजी से लेकर सरकारी संस्थानों तक कई थिएटर अभिनय संस्थान हैं। अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए, उन्हें सांस्कृतिक संरक्षण, डिजिटल एकीकरण और नीति समर्थन के लिए पहल के माध्यम से अपनी स्थिति को मज़बूत करना होगा। जबकि शोषितों या आम जनता के जीवन में सामाजिक परिवर्तन लाना, नुक्कड़ नाटक आंदोलन और यात्रा के केंद्र में है।

इसे प्राप्त करने के लिए ₹प्रगतिशील सामुदायिक विकास₹ प्रक्रिया को ₹लोकप्रिय शिक्षा₹ के साथ संयोजित करना आवश्यक है। एक लोकप्रिय रंगमंचीय अभ्यास के रूप में, नुक्कड़ नाटक एक सहभागी प्रक्रिया स्थापित करने का प्रयास करते हैं जो लक्षित दर्शकों के ₹सांस्कृतिक रूपों₹ के प्रति संवेदनशील होती है। नुक्कड़ नाटक, प्रोसेनियम थिएटर के विपरीत, वह स्थान है जहाँ अभिनेता अपनी कलात्मक और व्यावसायिक रुचियों को अपनी राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं के साथ जोड़ते हैं। हालाँकि, इसकी क्षमता को पूरी तरह से साकार करने और समाज पर प्रभाव डालने के लिए दीर्घकालिक विकासात्मक योजना को नाट्य प्रक्रिया के साथ जोड़ा जाना चाहिए। यह लक्ष्य नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समुदाय को जानने, लोगों की चिंताओं के मुद्दों को पहचानने, मनोरंजन और सामुदायिक अभिव्यक्ति को संयोजित करने, दर्शकों की भागीदारी को आमंत्रित करने और कार्यवाही के लिए आह्वान करने से प्राप्त किया जा सकता है।

एनबीएफसी और माइक्रोफाइनेंस कंपनियों को अधिक कर्ज दे सकेंगे बैंक, आरबीआई से मिली बड़ी राहत

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFCs) और सूक्ष्म वित्त संस्थानों (Microfinance Institutions - MFIs) को ऋण देने के लिए बैंकों के जोखिम भारांश (Risk Weight) को कम कर दिया है। इससे बैंकों की ऋण देने की क्षमता (Lending Capacity) बढ़ेगी और छोटे उधारकर्ताओं को अधिक वित्तीय सहायता मिलेगी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) के माइक्रोफाइनेंस लोन पर 100% जोखिम भार लागू रहेगा।

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) और सूक्ष्म वित्त (Microfinance) लोन देने वाली इकाइयों को बड़ी राहत दी है। अब बैंक इन कंपनियों को अधिक कर्ज दे सकेंगे, क्योंकि आरबीआई ने उनके लिए बैंक वित्त पर लागू जोखिम भारांश (Risk Weight) को घटा दिया है। इसे बैंक और NBFC के लिए बड़ी राहत के तौर पर देखा जा रहा है।

क्या है यह बदलाव और इसका असर?

आरबीआई के इस निर्णय से बैंकों की ऋण देने की क्षमता में वृद्धि होगी, क्योंकि उन्हें उपभोक्ता ऋण के लिए सुरक्षा निधि के रूप में कम पूंजी अलग रखनी होगी। इससे उपभोक्ताओं को आसानी से ऋण उपलब्ध हो सकेगा और एनबीएफसी व माइक्रोफाइनेंस कंपनियों को भी फंडिंग की बेहतर सुविधा मिलेगी।

पिछले साल बढ़ाया गया था जोखिम भारांश

नवंबर 2023 में, आरबीआई ने एनबीएफसी और माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के कर्ज देने के मानकों को कड़ा कर दिया था। इसके तहत उन सभी एनबीएफसी के लिए, जिनकी बाहरी क्रेडिट रेटिंग के अनुसार जोखिम भार 100% से कम था, उनके कर्ज पर जोखिम भार 25% तक बढ़ा दिया गया था। इससे बैंकों की मुश्किल बढ़ गई थी। उन्हें कंपनियों को दिए जाने वाले लोन पर अतिरिक्त पूंजी अलग रखने की जरूरत पड़ रही थी, जिससे ऋण प्रवाह प्रभावित हुआ था।

क्षेत्रीय ग्रामीण और स्थानीय बैंकों के लिए नियम

आरबीआई ने यह भी स्पष्ट किया कि जिन सूक्ष्म वित्त ऋणों को उपभोक्ता कर्ज की श्रेणी में नहीं रखा गया है और जो कुछ नियामकीय मानकों को पूरा करते हैं, उन्हें नियामकीय खुदरा पोर्टफोलियो (Regulatory Retail Portfolio - RRP) में शामिल किया जा सकता है। हालांकि, इसके लिए बैंकों को उचित नीतियां और संचालन प्रक्रियाएं लागू करनी होंगी।

इसके अलावा, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRB) और स्थानीय क्षेत्र बैंक (LAB) द्वारा दिए गए माइक्रोफाइनेंस ऋणों पर 100% जोखिम भारांश लागू रहेगा।

RBI के फैसले का क्या होगा असर?

एनबीएफसी और माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के लिए ऋण प्रवाह में वृद्धि होगी।

बैंकों को कम पूंजी अलग रखने की जरूरत होगी, जिससे वे अधिक लोन देने में सक्षम होंगे।

छोटे कर्ज लेने वाले व्यवसायों और ग्राहकों को लाभ मिलेगा।

इक्रा के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट अनिल गुप्ता ने कहा, "इस क्षेत्र में मौजूदा प्रतिकूल परिस्थितियों को देखते हुए यह एक स्वागतयोग्य कदम है। इससे संबंधित कंपनियों को राहत मिलेगी और ऋण प्रवाह में तेजी आएगी।"

यूनिवर्सल पेंशन स्कीम लाने की तैयारी; रोजगार की नहीं होगी शर्त, सबको मिलेगा फायदा

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार Universal Pension Scheme लाने पर विचार कर रही है जो स्वैच्छिक और अंशदायी होगी। इस योजना में रोजगार की अनिवार्यता नहीं होगी जिससे असंगठित क्षेत्र के मजदूर छोटे व्यापारी और स्वरोजगार करने वाले लोग पेंशन लाभ उठा सकेंगे। यह योजना प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PM-SYM) और राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS-Traders) जैसी मौजूदा योजनाओं को एकीकृत कर सकती है जिससे सामाजिक सुरक्षा (Social Security) को मजबूत किया जाएगा।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार यूनिवर्सल पेंशन स्कीम लाने पर विचार कर रही है। यह स्वैच्छिक (Voluntary) और अंशदायी (Contributory) होगी। इस पेंशन योजना के लिए रोजगार कोई शर्त नहीं होगी यानी इसमें आम नागरिक भी योगदान कर सकेंगे और फिर पेंशन पा सकेंगे। इस योजना का मकसद पारंपरिक रोजगार से परे सामाजिक सुरक्षा (Social Security) का विस्तार करना है। NDTV की एक रिपोर्ट के अनुसार, श्रम और रोजगार मंत्रालय ने इस प्रस्तावित समग्र योजना (Umbrella Scheme) पर विचार-विमर्श शुरू कर दिया है, जो मौजूदा पेंशन योजनाओं (Pension Schemes) को एकीकृत करने की दिशा में बढ़ेगी।

यूनिवर्सल पेंशन स्कीम में क्या होगा?

इस योजना को कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के तहत बनाया जा रहा है। इसके अंतिम प्रारूप को तैयार करने के बाद अलग-अलग हितधारकों (Stakeholders) की राय ली जाएगी।

नई योजना स्वैच्छिक होगी, यानी कोई भी इसमें शामिल हो सकेगा, चाहे उसके पास कोई नौकरी हो या नहीं।

इससे असंगठित क्षेत्र के लोग, जैसे कि छोटे व्यापारी, स्वरोजगार करने वाले भी योजना में शामिल हो सकेंगे।

इसमें प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (PM-SYM) और राष्ट्रीय पेंशन योजना (NPS-Traders) जैसी मौजूदा पेंशन योजनाओं को मर्ज किया जा सकता है।

ये योजनाएं रिटायरमेंट के बाद ₹3,000 की मासिक पेंशन प्रदान करती हैं, जिसमें ₹55 से ₹200 तक का योगदान किया जाता है, और सरकार भी इसमें बराबर का योगदान देती है।

अटल पेंशन योजना (APY) को भी इस नए ढांचे में शामिल करने की संभावना पर विचार किया जा रहा है।

सरकार Building and Other Construction Workers (BoCW) Act के तहत लिए गए उपकर (Cess) को निर्माण श्रमिकों की पेंशन वित्तीय सहायता के लिए उपयोग करने पर भी विचार कर रही है।

किन लोगों को मिलेगा फायदा?

यह योजना खासकर असंगठित क्षेत्र के मजदूरों, छोटे व्यापारियों, स्वरोजगार करने वालों और अन्य नागरिकों के लिए बनाई जा रही है। इसमें 18 साल या उससे अधिक उम्र के वे लोग शामिल हो सकेंगे, जो 60 साल के बाद पेंशन लाभ (Pension Benefits) पाना चाहते हैं।

केंद्र सरकार राज्यों को भी इस योजना में अपनी पेंशन योजनाओं को विलय करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। इससे पेंशन अंशदान को एक जगह लाया जा सकेगा। इससे पेंशन भुगतान (Pension Payout) में वृद्धि होगी। साथ ही, एक शख्स को अधिक पेंशन का लाभ लेने से भी रोका जा सकेगा।

भारत में वृद्ध आबादी का बढ़ता दबाव

मौजूदा अनुमानों के अनुसार, 2036 तक भारत में वरिष्ठ नागरिकों (60 साल और उससे अधिक) की संख्या 22.7 करोड़ तक पहुंच सकती है। यह कुल आबादी का 15 पीसदी होगी। वहीं, 2050 तक यह आंकड़ा 34.7 करोड़ तक पहुंच सकता है, जो कुल जनसंख्या का 20 फीसदी होगा।

इसके उलट अमेरिका, कनाडा, यूरोप, रूस और चीन जैसे देशों में पहले से ही सामाजिक सुरक्षा प्रणाली (Social Security System) मौजूद है। इसमें पेंशन, स्वास्थ्य सेवाएं और बेरोजगारी भत्ता शामिल हैं। डेनमार्क, स्वीडन, नॉर्वे, नीदरलैंड्स और न्यूजीलैंड जैसे देशों में यूनिवर्सल पेंशन योजनाएं (Universal Pension Schemes) पहले से ही लागू हैं।

भारत में मौजूदा सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था

अभी भारत की सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था मुख्य रूप से भविष्य निधि (Provident Fund), वृद्धावस्था पेंशन (Old Age Pension) और गरीब वर्गों के लिए स्वास्थ्य बीमा (Health Insurance) तक सीमित है।

इस प्रस्तावित यूनिवर्सल पेंशन योजना का उद्देश्य इन योजनाओं के दायरे का विस्तार करना और एक समावेशी (Inclusive) और सतत (Sustainable) पेंशन प्रणाली तैयार करना है, जिससे अधिक से अधिक लोगों को सामाजिक सुरक्षा मिल सके।

स्टारबक्स से 1100 कर्मचारियों की छंटनी, कंपनी ने क्यों उठाया ये कदम? 10 प्वाइंट में समझें

परिवहन विशेष न्यूज

सीईओ ने कर्मचारियों को लिखे पत्र में कहा कि कॉफी की दिग्गज कंपनी 1100 कॉर्पोरेट कर्मचारियों को बर्खास्त कर रही है जो बिक्री में गिरावट के बीच कॉफी चेन की पुनर्गठन की दिशा में उठाया गया नया कदम है। यह छंटनी कंपनी के इतिहास में सबसे बड़ी है।सीईओ ब्रायन निकोल ने कर्मचारियों को लिखे पत्र में कहा हमारा इरादा अधिक कुशलता से काम करना जवाबदेही बढ़ाना है।

नई दिल्ली। कॉफी चेन कंपनी स्टारबक्स ने वैश्विक स्तर पर 1,100 कर्मचारियों की छंटनी की तैयारी की है। इसके सीईओ ने कर्मचारियों को लिखे पत्र में कहा कि कॉफी की दिग्गज कंपनी 1,100 कॉर्पोरेट कर्मचारियों को बर्खास्त कर रही है, जो बिक्री में गिरावट के बीच कॉफी चेन की पुनर्गठन की दिशा में उठाया गया नया कदम है।

कंपनी के नए चेयरमैन और सीईओ ब्रायन निकोल ने परिचालन को ठीक करने के लिए यह कदम उठाया है।

क्यों उठाया ये कदम?

स्टारबक्स के सीईओ ब्रायन निकोल ने उन ग्राहकों को वापस लाने का संकल्प लिया है, जो 8 डॉलर के लैटे और लंबे इंतजार के समय से मना नहीं करते हैं। इससे हाल के महीनों में बिक्री पर भी दबाव पड़ा है। Starbucks CEO ने कंपनी के लिए रिस्ट्रक्चरिंग प्लान के तहत इस Lay Off का एलान किया है।

स्टारबक्स की छंटनी के बारे में दस बातें

स्टारबक्स ने एलान किया कि वह 1,100 कॉर्पोरेट कर्मचारियों को नौकरी से निकालने और कई सौ खाली या रिक्त पदों को बंद करने की योजना बना रही है। रिपोर्ट के अनुसार, यह छंटनी कंपनी के इतिहास में सबसे बड़ी है।

सीईओ ब्रायन निकोल ने कर्मचारियों को लिखे पत्र में कहा, 'हमारा इरादा अधिक कुशलता से काम करना, जवाबदेही बढ़ाना, जटिलता कम करना और बेहतर एकीकरण करना है।

स्टारबक्स के दुनिया भर में 16 हजार कर्मचारी हैं। कंपनी के कुछ कर्मचारी छंटनी से प्रभावित नहीं होंगे। इसमें रोस्टिंग, वेयरहाउस, कंपनी के स्टोर्स में काम करने वाले बैरिस्टा कर्मचारी शामिल हैं।

जनवरी में निकोल ने कहा था कि मार्च की शुरुआत में छंटनी की घोषणा की जाएगी। सभी कामों की देखरेख किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए जो निर्णय ले सके। हमारा आकार और संरचना हमें धीमा कर सकती है।

यह कदम निकोल द्वारा ग्राहकों के लिए स्टोर

के अनुभव पर पुनर्विचार करने और व्यवसाय को सुव्यवस्थित करने के प्रयासों के बीच उठाया गया है, जो कि स्टारबक्स के लिए मूल रूप से जाना जाने वाला अधिक व्यक्तिगत कॉफीहाउस वातावरण वापस लाने की उनकी प्रतिज्ञा का हिस्सा है।

स्टारबक्स ने पिछले साल सुस्त बिक्री को सुधारने के लिए निकोल को सीईओ नियुक्त किया था। उन्होंने कहा है कि वे सेवा समय में सुधार करना चाहते हैं

बीते एक साल में स्टारबक्स की वैश्विक बिक्री 2024 के वित्तीय वर्ष में 2 प्रतिशत तक कम हो गई है।

निकोल ने कंपनी के स्टोर्स में यूनियन बनाने के दृष्टिकोण में भी बदलाव देखा है, क्योंकि स्टारबक्स वर्कर्स यूनाइटेड द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले कर्मचारियों ने अमेरिका भर में 500 से अधिक स्टोर्स में सफलतापूर्वक यूनियन बना ली है, जिनमें 10,500 से अधिक कर्मचारी हैं।

इसके साथ ही जो कर्मचारियों इस छंटनी का शिकार होने वाले हैं, उन्हें 2 मई 2025 तक सैलरी और अन्य लाभ मिलते रहेंगे।

आवासीय बाजार में जोरदार तेजी, दिल्ली-एनसीआर में 31 फीसदी बढ़े घरों के दाम

2024 की अंतिम तिमाही में भारत के आठ प्रमुख शहरों में मकानों की कीमतों में 10% की सालाना वृद्धि दर्ज की गई। दिल्ली-एनसीआर (31%) और बेंगलुरु (23%) में सबसे अधिक उछाल आया। बिना बिके मकानों की संख्या घटी खासकर पुणे (14%) और हैदराबाद (13%) में। लग्जरी और अल्ट्रा-लक्जरी सेगमेंट की मांग बढ़ रही है। 2025 में ब्याज दरों में कटौती से बिक्री और बढ़ने की संभावना है।

नई दिल्ली। कैलेंडर ईयर 2024 की अंतिम तिमाही में भारत के आठ प्रमुख शहरों में आवासीय संपत्तियों की औसत कीमतों में 10% सालाना वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि 2021 से लगातार 16वीं तिमाही जारी रही, जो मजबूत मांग और सकारात्मक बाजार रुझानों का संकेत है। दिल्ली-एनसीआर में सबसे ज्यादा 31% की वृद्धि हुई, खासकर लग्जरी और अल्ट्रा-लग्जरी सेगमेंट में।

बेंगलुरु में 23% की सालाना वृद्धि दर्ज की गई।

अहमदाबाद में 15%, पुणे में 9% और चेन्नई में 6% की वृद्धि हुई।

हैदराबाद में मात्र 2% और कोलकाता में 1% की हल्की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

बिना बिके मकानों की संख्या में गिरावट

2024 की चौथी तिमाही में बिना बिके मकानों की संख्या लगातार चौथी बार घटी और सालभर में इसमें 5% की कमी दर्ज की गई। देशभर में बिना बिके मकानों की संख्या दिसंबर 2024 तक पहली बार 10 लाख से कम हो गई।

पुणे में सबसे अधिक 14% और हैदराबाद में 13% की गिरावट दर्ज की गई। हालांकि, 40% बिना बिके मकान अकेले मुंबई मेट्रो रीजन (MMR) में थे।

बड़े मकानों और बेहतर सुविधाओं की मांग बढ़ी

क्रेडाई नेशनल के अध्यक्ष बोमन ईरानी के अनुसार, "मकानों की कीमतों में बढ़ोतरी यह बताती है कि खरीदारों का भरोसा बना हुआ है। लोग अब बड़े घरों और बेहतर सुविधाओं वाले अपार्टमेंट्स को प्राथमिकता दे रहे हैं। इससे एकीकृत टाउनशिप और हाई-एंड प्रोजेक्ट्स की मांग बढ़ रही है।" उन्होंने यह भी बताया कि निर्माण लागत और ऊंची जमीन की कीमतें भी इस वृद्धि के प्रमुख कारण हैं।

क्रेडिट कार्ड खर्च में उछाल: जनवरी 2025 में 1.84 लाख करोड़ रुपये का लेनदेन, यूपीआई का दबदबा बरकरार

परिवहन विशेष न्यूज

जनवरी 2025 में क्रेडिट कार्ड खर्च 10.8% बढ़कर ₹1.84 लाख करोड़ हुआ। एचडीएफसी और आईसीआईसीआई बैंक के उपभोक्ताओं ने सबसे अधिक खर्च किया। पांच सालों में क्रेडिट कार्ड की संख्या 10.8 करोड़ हो गई। यूपीआई डिजिटल भुगतान में 83% हिस्सेदारी के साथ सबसे आगे है। 2018 से 2024 के बीच यूपीआई लेनदेन 17221 करोड़ तक पहुंच गया जिससे पारंपरिक पेमेंट सिस्टम का यूज घटा है।

नई दिल्ली। भारत में डिजिटल पेमेंट का चलन तेजी से बढ़ रहा है। जनवरी 2025 में क्रेडिट कार्ड के जरिए उपभोक्ताओं ने 1.84 लाख करोड़ रुपये खर्च किए। यह पिछले साल की तुलना में 10.8% अधिक है। हालांकि, डिजिटल पेमेंट के मामले में यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट सिस्टम) का दबदबा बना हुआ है। यह करीब 83 फीसदी की पसंदीदा ऑनलाइन पेमेंट का तरीका है। आइए क्रेडिट कार्ड और यूपीआई के चलन का पूरा लेखाजोखा जानते हैं।

HDFC और ICICI बैंक का दबदबा

HDFC बैंक के क्रेडिट कार्ड उपयोगकर्ताओं ने 50,664 करोड़ रुपये खर्च किए, जो 15.91% की बढ़ोतरी है।

ICICI बैंक के ग्राहकों का खर्च 35,682 करोड़ रुपये रहा, जिसमें 20.25% की वृद्धि देखी गई।

एसबीआई क्रेडिट कार्ड धारकों ने 28,976 करोड़ रुपये खर्च किए, जो पिछले साल की तुलना में 6% कम है।

एक्सिस बैंक के ग्राहकों का खर्च 20,212 करोड़ रुपये रहा, जो 0.45% की गिरावट दर्शाता है।

क्रेडिट कार्ड की संख्या में तेज वृद्धि

आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, क्रेडिट कार्ड की संख्या पिछले पांच वर्षों में दोगुनी से अधिक बढ़कर 10.8 करोड़ हो गई। एचडीएफसी बैंक ने जनवरी में 2,99,761 नए क्रेडिट कार्ड जारी किए। एसबीआई ने 2,34,537 नए क्रेडिट कार्ड जोड़े। वहीं, आईसीआईसीआई बैंक ने 1,83,157 नए क्रेडिट कार्ड जारी किए।

डिजिटल भुगतान में UPI की हिस्सेदारी 83%

RBI की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, यूपीआई (UPI) डिजिटल भुगतान का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। 2019 में 34% की हिस्सेदारी से बढ़कर 2024 में 83% हो गई। अन्य भुगतान प्रणालियों (RTGS, NEFT, IMPS, Credit/Debit Cards) की हिस्सेदारी घटकर 17% रह गई। यूपीआई लेनदेन की संख्या 2018 के 375 करोड़ से 2024 में 17,221 करोड़ तक बढ़ी। यूपीआई के माध्यम से कुल लेनदेन मूल्य 2018 में 5.86 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2024 में 246.83 लाख करोड़ रुपये हो गया।

नया डेटा स्पष्ट तौर पर बताता है कि क्रेडिट कार्ड खर्च में तेजी से वृद्धि हो रही है। इसकी अगुआई एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक जैसे प्राइवेट लेंडर कर रहे हैं। क्रेडिट कार्ड यूजर बढ़ रहे हैं, लेकिन डिजिटल पेमेंट में यूपीआई का दबदबा बरकरार है। 2024 तक यूपीआई का योगदान 83% तक पहुंच चुका है। इससे पारंपरिक भुगतान प्रणालियों का दबदबा घटा है।

पेटीएम की सरकार के साथ हुई डील, क्या शेयरों में दिखेगी हलचल?

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार ने Paytm के साथ एक समझौता किया है जिसके तहत स्टार्टअप्स को मेंटरशिप बाजार पहुंच और फंडिंग के अवसर मिलेंगे। यह साझेदारी फिनटेक और मैन्युफैक्चरिंग स्टार्टअप्स के विकास में तेजी लाएगी। Paytm for Startups पहल में निवेश नियामक मार्गदर्शन और वर्कशॉप शामिल हैं। पेटीएम के शेयरों में हालिया उतार-चढ़ाव देखने को मिला है।

नई दिल्ली। सरकार ने Paytm (One97 Communications Ltd) के साथ एक समझौता किया है, जिसके तहत कंपनी स्टार्टअप्स को मेंटरशिप, इन्फ्रास्ट्रक्चर सपोर्ट, बाजार तक पहुंच और फंडिंग के अवसर प्रदान करेगी। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने बुधवार को जारी एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई।

उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) ने Paytm के साथ एक मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं। इसका मकसद देश में विनिर्माण और फिनटेक स्टार्टअप्स के नवाचार को बढ़ावा देना और उनके विकास में तेजी लाना है। इस MoU पर DPIIT के निदेशक सुमीत कुमार जरंगल और Paytm के फाउंडर एवं सीईओ विजय शेखर शर्मा ने हस्ताक्षर किए।

साझेदारी पर क्या बोले पेटीएम और सरकार

मंत्रालय ने कहा, ₹इस साझेदारी के तहत, Paytm स्टार्टअप्स को मेंटरशिप, इन्फ्रास्ट्रक्चर सपोर्ट, बाजार पहुंच और फंडिंग के मौके देगा। जिससे वे अपने व्यवसाय को तेजी से बढ़ा सकें और इनोवेशन कर सकें।₹ यह पहल उद्यमियों को जरूरी संसाधन उपलब्ध कराने में मदद करेगी। इससे वे अत्याधुनिक भुगतान और वित्तीय प्रौद्योगिकी समाधान विकसित कर सकें। वे Paytm के बड़े व्यापारी नेटवर्क का लाभ भी उठा सकेंगे।

DPIIT के संयुक्त सचिव संजीव ने कहा, ₹Paytm की फिनटेक विशेषज्ञता और इन्फ्रास्ट्रक्चर का लाभ उठाकर, हम उद्यमियों को चुनौतियों से उबरने और अपने वेंचर को बढ़ाने में सहायता करने का प्रयास कर रहे हैं।₹ वहीं, Paytm के संस्थापक एवं सीईओ विजय शेखर शर्मा ने कहा, ₹Paytm उद्यमियों को मेंटरशिप, वित्तीय सहायता और अत्याधुनिक तकनीक तक पहुंच प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।"

Paytm for Startups पहल में क्या होगा?

कंपनी फिनटेक हार्डवेयर निर्माताओं को समर्थन देने के लिए डेडिकेटेड प्रोग्राम शुरू करेगी। ये पहल मेंटरशिप कार्यक्रम, निवेशकों के साथ फंडिंग के अवसर, नियामक मार्गदर्शन, इंडस्ट्री-फोकस्ड वर्कशॉप और प्रभाव आकलन शामिल करेंगी। DPIIT इससे पहले Apna (प्रोफेशनल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म), Rukam Capital, Avaana Capital, Bhaane Group, Flipkart और ITC जैसी कई कंपनियों के साथ इसी तरह के समझौते कर चुका है।

पेटीएम के शेयरों का हाल क्या है?

पेटीएम के शेयर मंगलवार को 2.81 फीसदी की गिरावट के साथ 733.90 रुपये पर बंद हुए थे। पिछले 6 महीने के दौरान इसमें 38.37 फीसदी की तेजी आई है। वहीं, बीते एक साल में इसने 71 फीसदी से अधिक का रिटर्न दिया है। हालांकि, पेटीएम अभी भी अपने आईपीओ प्राइस के मुकाबले काफी नीचे है। अगर लिस्टिंग के बाद से देखा जाए, तो पेटीएम के शेयरों ने अभी तक 52.98 फीसदी का नेगेटिव रिटर्न दिया है। पेटीएम का मार्केट कैप 46.80 हजार करोड़ रुपये है।

शिक्षा में महत्वपूर्ण बदलाव है महिला अध्यापिकाओं की बढ़ती संख्या

प्रियंका सौरभ

यूडीआईएसई+ २०२३-२४ रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय स्कूल शिक्षकों में अब 53.34 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो शिक्षा में उनकी बढ़ती भूमिका को दर्शाता है। उच्च शिक्षा में केवल 43% संकाय महिलाएं हैं, नेतृत्व की भूमिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व और भी कम है। शैक्षणिक जगत में लैंगिक समानता अभी भी जड़ जमाये पूर्वाग्रहों, व्यावसायिक बाधाओं और संस्थागत कठिनाइयों के कारण बाधित है। भारत के शिक्षण कार्यबल में महिलाओं के प्रतिशत में वृद्धि शिक्षा की गुणवत्ता, समावेशिता और सामाजिक समानता में आमूलचूल परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षणशास्त्र में लैंगिक पूर्वाग्रहों को चुनौती दी जाती है, समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाता है, तथा महिला शिक्षकों द्वारा महिला विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि की जाती है। छात्रों की व्यापक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए, महिला शिक्षक कक्षा में अधिकाधिक भागीदारी और लिंग-संवेदनशील शिक्षण को प्रोत्साहित करती हैं। यूनेस्को की २०२२ की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं द्वारा संचालित कक्षाओं में समावेशी भागीदारी २०% अधिक होती है। सामाजिक बाधाओं और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को दूर करके, महिला शिक्षकों की उपस्थिति लड़कियों के शैक्षिक अवसरों को बढ़ाती है। महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि के कारण बिहार की कन्या उत्थान योजना में महिलाओं के नामांकन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। लिंग भूमिकाओं, बाल विवाह और मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में बातचीत को सामान्य बनाकर, महिला शिक्षक समानता को बढ़ावा देती हैं। उड़ान योजना के अंतर्गत किशोरियों को महिला शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिला शिक्षकों द्वारा भावनात्मक समर्थन देने की संभावना अधिक होती है, जिससे विद्यार्थियों का कल्याण बेहतर होता है।

उच्च शिक्षा संकाय पदों में महत्वपूर्ण लैंगिक असमानताएं महिला संकाय सदस्यों के कम प्रतिनिधित्व के कारण होती हैं। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण के अनुसार, शिक्षण पदों पर पुरुषों की संख्या अधिक होने के बावजूद, उच्च शिक्षा संकाय में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 43% है। आईआईटी और एनआईटी में महिला संकाय का प्रतिनिधित्व अभी भी २०% से कम है, जो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में लैंगिक असमानताओं को दर्शाता है। अकादमिक नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर स्तर तक सीमित है, जहां उनका प्रतिशत तेजी से गिरता है। सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में २५% से भी कम पूर्ण प्रोफेसर महिलाएं हैं, जो निर्णयों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है। भारत के शीर्ष 50 विश्वविद्यालयों में 10% से भी कम कुलपति महिलाएं हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं के कारण, केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है, जबकि ग्रामीण और उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों में यह कम है। केरल के सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में आधे से अधिक प्राध्यापक महिलाएं हैं, जबकि बिहार और राजस्थान में यह प्रतिशत 30% से भी कम है। नियुक्ति और पदोन्नति में अचेतन पूर्वाग्रहों के कारण महिलाओं के नेतृत्वकारी भूमिकाएं निभाने की संभावना कम होती है। अकादमिक महिलाओं को प्रायः मार्गदर्शन और मजबूत व्यावसायिक नेटवर्क का अभाव होता है, जो शोध के अवसरों और कैरियर में उन्नति के लिए आवश्यक है। कई महिलाएं घर के कामकाज की दोहरी जिम्मेदारी के कारण अपने करियर में ब्रेक ले लेती हैं, जिसका असर उनकी उन्नति और शोध कार्य की संभावनाओं पर पड़ता है।

समान कैरियर उन्नति के अवसर सुनिश्चित करना, लिंग कोटा स्थापित करना, चयन समितियों की निष्पक्षता सुनिश्चित करना तथा स्पष्ट पदोन्नति मानकों को लागू करना, शैक्षणिक नियुक्ति समितियों में 40 प्रतिशत महिला प्रतिनिधित्व की अनिवार्यता के द्वारा, जर्मनी का डीएफजी कार्यक्रम अधिक महिलाओं को उच्च शिक्षा में नामांकन के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षाविदों में महिलाओं की मेंटरशिप और नेटवर्किंग अवसरों तक पहुंच बढ़ाना: महिला संकाय सदस्यों को वरिष्ठ शिक्षाविदों के साथ जोड़ने के लिए औपचारिक मेंटरशिप कार्यक्रम स्थापित करना, वित्तपोषण के अवसरों, अनुसंधान और नेतृत्व विकास पर सलाह देना। केंद्रित मार्गदर्शन और समर्थन नेटवर्क के मूल्य के प्रमाण के रूप में, अमेरिका का "विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाएं" कार्यक्रम नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की संख्या बढ़ाने में सहायक रहा है। कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना, परिसर में बाल देखभाल सेवाएं प्रदान करना, सवेतन मातृत्व अवकाश बढ़ाना, तथा लचीले कार्यकाल पथ को लागू करना, महिला संकाय सदस्यों को मातृत्व के बाद एक वर्ष का कार्यकाल विस्तार प्रदान करके उनके शोध करियर को जारी रखने में मदद करता है। महिलाओं की प्रशासनिक और शैक्षणिक दृश्यता में सुधार लाने के लिए विशिष्ट वित्तपोषण उपलब्ध कराना तथा उनके लिए नेतृत्व विकास पाठ्यक्रम चलाना, भारत की "महिला वैज्ञानिक योजना" महिला शोधकर्ताओं को करियर ब्रेक के बाद वित्त पोषण प्रदान करके शिक्षा जगत में वापस लौटने में मदद करती है। उच्च शिक्षा संकाय में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 43% है, जो कक्षा के बाहर उनके प्रभाव को सीमित करता है। आईआईटी और आईआईएम में महिला शिक्षकों का प्रतिशत २०% से भी कम है। यूजीसी का जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस (जीएटीआई) कार्यक्रम महिला संकाय सदस्यों को नेतृत्वकारी पदों पर आसीन होने के लिए प्रोत्साहित करता है। समान वेतन के दिशा-निर्देश स्थापित करें, श्रम कानूनों को अधिक सख्ती से लागू करें तथा अनुबंध शिक्षकों को नियमित करें। निजी शिक्षा में समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 का सशक्त प्रवर्तन आवश्यक है। परिसर में सुरक्षा प्रोटोकॉल, परिवहन विकल्प और शिकायत प्रक्रिया को बेहतर बनाएं। शैक्षणिक संस्थानों में महिला सुरक्षा उपायों की स्थापना को निर्भया फंड (२०१३) द्वारा वित्त पोषित किया गया है। लिंग-संतुलित शिक्षण स्टाफ प्रारंभिक शिक्षा में स्त्रीकरण को कम करेगा और देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों को सामान्य बनाएगा। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में, फिनलैंड और स्वीडन पुरुषों की भर्ती को आक्रामक रूप से प्रोत्साहित करते हैं। गुमनाम शिकायत निवारण प्रक्रियाएं स्थापित करें, सुनिश्चित करें कि आंतरिक शिकायत समितियां (आईसीसी) कार्यरत हों, तथा सभी विश्वविद्यालयों में कठोर उत्पीड़न-विरोधी नीतियां लागू करें। यूजीसी के २०२३ निर्देश के अनुसार विश्वविद्यालयों में आईसीसी आवश्यक है; हालाँकि, अभी भी कार्यान्वयन में खामियाँ हैं, विशेष रूप से छोटे और ग्रामीण संस्थानों में। शिक्षा जगत में लैंगिक अंतर को कम करने के लिए मजबूत मार्गदर्शन कार्यक्रम, समावेशी नियुक्ति प्रथाएं, संस्थागत परिवर्तन और बहुआयामी रणनीति आवश्यक हैं। परिवार-अनुकूल कार्यस्थलों को बढ़ावा देना, पारदर्शी पदोन्नति की गारंटी देना, तथा भेदभाव-विरोधी कानूनों को मजबूत बनाना, उच्च शिक्षा में महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायक हो सकता है। लिंग-संवेदनशील, योग्यता-आधारित नीतियों की ओर प्रतिमान बदलाव से प्रतिनिधित्व में सुधार होगा और भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

हमारी संस्कृति ,सभ्यता और तहज़ीब से जुड़ा हुआ है योग

योगा एक पुराना फन है , हुनर है, वादिए शिंद की (सभ्यता)तहजीब की तलाश में एक खुदाई के दौरान कई मुर्तियां मिली जो पांच हजार वर्ष पुरानी थी । जिन पर योगा के विभिन्न अदाज थे , अमेरिका युरोप में भी योगा के फायदों से प्रभावित होकर अपनी स्कूलों में एक पाठ के रूप में बढ़ाया जाता है । हिन्दूग्रंथ उपनिषद जो आठसौ वर्ष पूर्व लिखी गई थी । उसमें भी योगी के बारे में विस्तृत वर्णन पाया जाता है । लोक गीतों भारतीय मजहब और तहजीब के साथ योगा का बहुत गहरा ताल्लुक है । यह पुराने जमाने से ही हमारी संस्कृति का अहम अंग रहा है । योगा संस्कृत भाषाका शब्द है । जिसका मतलब है काबू पाना । योगाकेजरिए ना सिर्फहम शारीरक रूप से फिट रहते हैं , बल्कि जहनी और जज्बाती तौर पर भी शख्सियत बेलेंस में रहती है । योगा की मदद से हम अपनी जिन्दगी को खुशगवार बना सकते हैं । योगा के जरिए हम अपनी फीटनेस बरकरार रख सकते हैं । वजन में कमी और थकान से निजात पाना भी आसान हो जाता है । योगा करने से पहले हमें किसी भी काबिल योगा एक्सपर्ट से सलाह एवं मार्गदर्शन ले लेना चाहिए । योगा की जगह साफ - सुथरी होनी चाहिए एवं कपड़े डीले डाले होने चाहिए । योगासन सुबह के नास्ते से पहले खाली पेट किया जाना चाहिए । योगा के बाद नियमित रूपसे आधा घंटे बाद पौष्टिक भोजन एवं दूध पिया जा सकता है । योगा शाम को भी किया जा सकता है । आइए आपको गौमुखासन के सम्बंध में बताते हैं । यह आसन छाती , फेफड़ोव हृदय

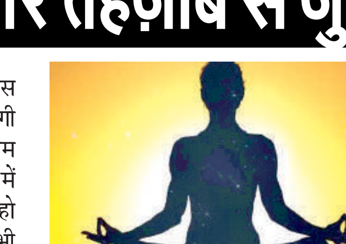

को सुदृढ़बनाता है और इसलिए यह आसन दमावश्वसनसंबंधी समस्याओं में लाभकारी होता है । यह आसन ऊपरी बांह को पीठ तथा जांग को मजबूत बनाता है । गोमुखासन करने का तरीका भूमि पर सीधै तनी अवस्था में बैठे , दोनों पैर सामने सीधे रखे , बाएं पैर को मोड़कर एड़ी नितम्व के पास रखे अथवा एड़ी पर बैठसकते है , इसी प्रकार दाएं पैरको मोडकर बाये पैर के ऊपर इस प्रकार रखे कि दोनों घुटने एक दूसरे से स्पर्श करते हुए हो । दाई ऐड़ी को बाएं तिम्ब के साथ मिलाए , अब दायें हाथ को ऊपर उठाकर पीठ की ओर मोड़िए तथा बायें हाथ को पीठ के पीछे से लेकर हाथ को पकड़िए कुछ सेकण्ड के लिए इसी अवस्था में रहे । जब तक कि आप इसे आराम से कर सकें । गर्दन व कमर सीधी रखें , अपने हाथों व पैरों की स्थिति को बदलकर इस प्रक्रिया को दोहराएं । योग करने से किसी भी प्रकार का रोग , तनाव , अनिन्द्रा और छोटी - मोटी से बिमारी से बचा जा सकता है । योगासन करें और रखें अपने आपको चुस्त दुरुस्त,और सेहतमंद ।

डॉ. मुश्ताक़ अहमद

पूर्व केंद्रीयमंत्री बिस्वेश्वर टुडू भगवान श्रीलिंगराज के दर्शन किये

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : पवित्र महाशिवरात्रि यही कारण है कि श्रीलिंगराज मंदिर में चहल-पहल बढ़ गई है। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीयमंत्री बिस्वेश्वर टुडू उनकी परिबार के साथ भगवान श्रीलिंगराज के दर्शन किये।शाम को मुख्यमंत्री मोहन माझी भी दर्शन करेगें । भगवान के दर्शन के साथ-साथ वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेंगे।फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के अवसर पर लाखों भक्त एकेश्वर भगवान शिव, श्रीलिंगराज के दर्शन करने आते हैं। वे निर्जल व्रत रख रहे हैं, दीप जला रहे हैं और महादीप दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। शाम ढलने के बाद सभी लोग चातक की तरह बैठकर मंदिर के शिखर को निहारते रहेंगे। वे अपेक्षित समय पर महादीप के उदय होने के आनन्ददायी क्षण का अनुभव करेंगे। सम्पूर्ण वातावरण शिव पंचाक्षरी मंत्र से गूंज उठेगा। पवित्र महादीप के दर्शन के बाद श्रद्धालु अपना उपवास खोलेंगे और आशीर्वाद लेंगे। श्रद्धालुओं के आगमन की प्रत्याशा में श्रीलिंगराज मंदिर को फूलों से सजाया जा रहा है। श्रीजीउ के इस महान उत्सव को मनाने के लिए प्रशासन द्वारा व्यापक प्रबंध किए गए हैं। सुबह तीन बजे मंगला आरती के बाद श्रद्धालु दोपहर साढ़े तीन बजे से रात 11 बजे तक सहाना मेले का भ्रमण किया। इसके साथ ही महास्नान अनुष्ठान पूरा हो जाता है। दिनभर श्रद्धालु पेड़ के पास से ही दर्शन करते रहे। कतार में खड़े होकर दर्शन करने के लिए बैरिकेड्स की व्यवस्था की गई है। स्वयंसेवक श्रद्धालुओं को हर प्रकार की सहायता प्रदान कर रहे हैं। बीमार लोगों को आपातकालीन उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। एम्बुलेंस और अग्निशमन कर्मी जगतिया में हैं। पेयजल, शौचालय, स्वच्छता आदि की व्यवस्था बीएमसी और वाटको द्वारा की गई है।

परोपकार व परामर्श के महान व्यक्तित्व के धनी दानवीर सर सेठ हुकुमचंद जी

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर।

'पुण्यात्मा व्यक्ति का वह पुण्य कभी भी खत्म नहीं होता है। एक सदी के बाद भी अपने परोपकार के मध्यम से अपने दान पुण्यों के कार्यों में भारत ही नही बल्कि पूरे विश्व मे मध्यप्रदेश के इन्दौर का नाम रोशन करने वाले , हाबल्या कबिल्या के नाम से विख्यात ऐसे बिरले व्यकतित्व के धंनी दानवीर सर सेठ हुकुमचंद जी की पुण्यतिथि है। राजस्थान के लाडनूं गांव से माता जबरी बाई व पिता स्वरुप चंद जी की संतान हुकुमचंद जी आज इस आधुनिक युग मे भी उनके प्रसंगों मे उभरते राष्ट्र की परिकल्पना और विकसित भारत का वह आत्म-निर्भर स्वरूप था। उनके कार्यों से आज भी प्रेरणा हमें मिलती है । तभी तो इन्दौर के सर सेठ हुकुमचंद जी का नाम अमेरिका के शेयर बाजार के आफिस यानी स्टाक एक्सचेंज मे आज भी स्वर्ण अक्षरों मे अंकित है। हुकुमचंद सेठ जी के बारे में यहां कहा जाता था कि आज का भाव यह पर कल का सेठ हुकुमचंद जाने। वही बहुत थोडे समय मे ही हमारे शहर मे उद्योग धंधों की बहार लाने वाले कपडा मिलो के जनक बने सेठ हुकुमचंद जी ने लोगो को रोजगार दिया । तभी इस छोटे से शहर को भव्यता दिलाने के लिए उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई और इन्दौर का इतवरिया बाजार ने व्यापार शैली के अनमोल रत्न हुकुमचंद को सेठ बनाया । वहीं सेठ जी की कर्मभूमि थी।, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों मे उन्हें जैन सम्राट , तीर्थ भक्त, शिरोमणि, रायबहादुर, राज्य भूषण, राव राजा जैसी उपाधि से विभूषित किया गया था। सर सेठ हुकुमचंद जी जैसा दानवीर सेठ उस जमाने में दूसरा कोई नही रहा।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी दो बार इन्दौर आये और दोनों बार उनके स्वागत की जिम्मेवारी सेठ हुकुमचंद जी की ही थी । जब उनके अपने निवास स्थल इंदभवन मे गांधीजी ने भोजन किया , तो वह भोजन उस जमाने मे चाँदी के बर्तनों मे कराया गया था । गांधी जी मजाक मे बोले में तो जिस बर्तन मे भोजन करता हूँ वह अपने पास ही रख लेता हूँ । इस पर बडी विनम्रता से सेठ जी ने कहा यहां तो आप के लिए ही है । फिर सेठ जी ने महात्मा गांधी जी को उनके भलाई के कार्यों के लिए राष्ट्र सेवा हेतु दान दिया। वही इन्दौर के हिन्दी साहित्य समिति के भवन निर्माण में भी सेठ हुकुमचंद जी का बहुत बड़ा योगदान रहा। इस महानगर इन्दौर मे सेठ जी का सहयोग कभी भी शहर नही भूल सकता । उन्होंने ने तो पीढीयों को सुधार दिया । उस पुराने जमाने के भारत के जैन समाज के सबसे ताकतवर व बडे समाजसेवी के रुप में वह मार्गदर्शक रहे । विश्व बाजार में आप के नाम की धूम थी तभी तो उन्हें कॉटन आफ किंग भी कहते थे । आप ने संत महात्मा मुनियों त्यागी यो के लिये संत निवास व भवन निमार्ण करायें । पूरे भारत के जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार किये । पथिक परेशान यात्रियों के लिये धर्मशाला , बीमार दुखियों के लिये दवाखाना व अस्पतालों का निर्माण करवाया था । वह सही में पुण्यात्मा ,परोपकार व परामर्थ के महान व्यकतित्व के धनी थें । उनकी पुण्यतिथि पर इन्दौर की जनता की और से भावभीनी श्रद्धांजलि व शत शत नमन ।

सीबीआई के नाम ले कर 14 लाख रुपये छीने: 3 दिन तक डिजिटल गिरफ्तारी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

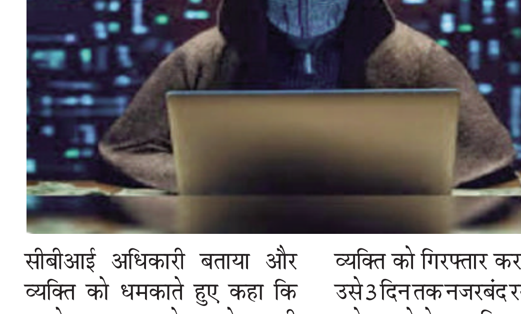

भुबनेश्वर: 3 दिन तक डिजिटल गिरफ्तारी । मैं दिल्ली सीबीआई कार्यालय से बोल रहा हूं। आपके खिलाफ 3 करोड़ रुपये का मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया गया है। सीबीआई अधिकारी ने अपना परिचय देकर उसे डराया, फिर डिजिटल तरीके से उसे तीन दिन के लिए गिरफ्तार कर लिया और उससे 14 लाख रुपये लूट लिए। यह घटना तब प्रकाश में आई जब धोखाधड़ी का शिकार हुए बरहामपुर क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने साइबर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

जानकारी के अनुसार पिछले 20 तारीख को जब शिकायतकर्ता अपने कार्यालय के बाहर था, तो अचानक उसे एक अज्ञात नंबर से कॉल आया। फोन पर जालसाज ने खुद को सीबीआई अधिकारी बताया और व्यक्ति को धमकाते हुए कहा कि उसके नाम पर 3 करोड़ रुपये का मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज है। उन्होंने उसे धमकी दी कि यदि वह 24 घंटे के भीतर सीबीआई के समक्ष पेश नहीं हुआ तो स्थानीय पुलिस उसे गिरफ्तार कर लेगी। गिरफ्तारी के डर से एक व्यक्ति ने डिजिटल तरीके से एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया और उसे 3 दिन तक नजरबंद रखा। उन्होंने उसे मामले से बाहर निकालने के लिए विभिन्न चरणों में उससे 1.4 लाख रुपये लिये। पैसे लेने के बाद उन्होंने मोबाइल नंबर ब्लॉक कर दिया। धोखाधड़ी का शिकार होने का अहसास होने पर उन्होंने आज साइबर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

चन्द्रशेखर आजाद: क्रांति का तेजोमय सूर्य : [अमर बलिदानी: एक नाम, एक संकल्प, एक गाथा]

हर साल २७ फरवरी को भारत की पावन धरती एक ऐसे ओजस्वी सपूत को श्रद्धा के फूल अर्पित करती है, जिसने अपने अनुपम शौर्य और असीम बलिदान से स्वाधीनता की अमिट गाथा रची। चन्द्रशेखर आज़ाद—यह नाम न केवल एक व्यक्तित्व, अपितु एक प्रचंड ज्वाला का प्रतीक है, जिसने अंग्रेजी हुकूमत के अंधेरे साम्राज्य को अपने तेज से भस्म करने का संकल्प लिया था। वे एक ऐसे क्रांतिवीर थे, जिनके हृदय में देशप्रेम की अग्नि धधकती थी और जिनके अद्भुत साहस ने नन्हे भारत के करोड़ों मन में स्वतंत्रता का स्वप्न जागृत किया। उनकी पुण्यतिथि हमें उस तेजोमय जीवन की स्मृति में झुकने और उनके अधूरे संकल्पों को पूर्ण करने का आह्वान करती है।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म २३ जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के भाबरा (अब अलीराजपुर जिला) में हुआ। उनके पिता पंडित सीताराम तिवारी और माता जगरानी देवी एक साधारण परिवार से थे, पर उनकी रगों में देशभक्ति का लहू दौड़ता था। नन्ही उम्र से ही चन्द्रशेखर के हृदय में स्वतंत्रता की आग धधक रही थी। उनकी माँ उन्हें एक निर्भीक और छोटा सिपाही बनाना चाहती थीं, और यह माँ की वह पवित्र आकांक्षा थी जो उनके जीवन में साक्षात रूप ले चुकी थी। संस्कृत पाठशाला में प्रारंभिक शिक्षा पाने वाले चन्द्रशेखर की असली दीक्षा तब हुई, जब देश की गुलामी की जंजीरों ने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया।

1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार की वीभत्स घटना ने चन्द्रशेखर आज़ाद के हृदय में क्रांति की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। मासूम आँखों ने जब निर्दोष भारतीयों की निर्मम हत्या का वह भयावह दृश्य देखा, तो उनका कोमल मन आक्रोश की अग्नि में तपकर फौलाद बन गया। मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में ही वे महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के अग्रदूत बन गए। १९२१ में जब उन्हें अंग्रेज़ों ने गिरफ्तार किया और मजिस्ट्रेट ने उनका नाम पूछा, तो उन्होंने गर्व से अपना परिचय दिया— "आज़ाद!" पिता का नाम पूछे जाने पर उनका गर्जन हुआ— "स्वतंत्रता!" और घर?— "जेलखाना!" यह कोई साधारण उत्तर नहीं, बल्कि दासता की बेड़ियों को तोड़ने की हुंकार थी। वह ऐतिहासिक क्षण, जब उनके ओजस्वी शब्द गूंजे, उनके जीवन की दिशा और दशा निर्धारित कर गया। उसी दिन उन्होंने अपने अंतर्मन में यह अमिट संकल्प कर लिया कि वे इस मातृभूमि को कभी गुलामी के अभिशाप में जकड़ने नहीं देंगे।

असहयोग आंदोलन के मंद पड़ते ही चन्द्रशेखर आज़ाद की प्रचंड ऊर्जा ने क्रांति की राह पकड़ ली। अब वे अहिंसा से आगे बढ़कर सशस्त्र संग्राम के पथिक बन चुके थे। उनका संघर्ष किसी व्यक्तिगत विद्रोह का नहीं, बल्कि राष्ट्र को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने का था। उन्होंने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की मशाल को अपने हाथों में थामा, जिसके परमवीर सेनापति रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अद्वितीय योद्धा थे। 1925 का काकोरी कांड उनके शौर्य, संगठन कौशल और अदम्य साहस का जीवंत प्रमाण बन गया। इस ऐतिहासिक घटना में क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश खजाने पर धावा बोलकर न केवल हथियारों का जखीरा जुटाया, बल्कि साम्राज्यवाद की नींव तक हिला दी। भले ही इस संग्राम में बिस्मिल और उनके अनेक वीर साथियों को फांसी पर लटका दिया गया, लेकिन आज़ाद अपनी चतुराई और अद्वितीय रणकौशल से अंग्रेज़ी सरकार के लिए एक अबूझ पहेली बने रहे। वे कभी किसी के हाथ नहीं आए, और हर प्रयास के बावजूद ब्रिटिश सरकार उनकी छाया तक नहीं पकड़ सकी। उनका संकल्प अटूट था— "हम जीते जी कभी गिरफ़्तार नहीं होंगे!"

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की क्रांतिकारी ज्वाला को और अधिक प्रचंड बनाते हुए चन्द्रशेखर आज़ाद ने संगठन को नए विचार और ऊर्जा से सिंचित किया। उन्होंने इसे केवल एक विद्रोही आंदोलन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि एक सशक्त विचारधारा का रूप देते हुए हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी की नींव रखी। उनका उद्देश्य मात्र ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना नहीं था, बल्कि एक न्यायसंगत, शोषणमुक्त और समाजवादी भारत की स्थापना करना था। आज़ाद का सपना था— एक ऐसा हिंदुस्तान, जहां समानता, स्वतंत्रता और क्रांति की गूंज हो। उन्होंने भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु जैसे क्रांतिपुत्रों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मातृभूमि की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। उनकी रणनीति, उनका अद्वितीय नेतृत्व और अपराजेय साहस स्वतंत्रता संग्राम को एक नए, प्रखर और संगठित स्वरूप में ढाल रहा था। वे केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि क्रांति के मार्गदर्शक थे, जिनकी सोच और संकल्प ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्णिम अध्यायों की रचना की।

चन्द्रशेखर आज़ाद का व्यक्तित्व शौर्य, पराक्रम और अदम्य साहस की सजीव प्रतिमूर्ति था। उनकी घनी मूंछें, तेजस्वी मुखमंडल और चमकती आंखें उनकी क्रांतिकारी आभा को और प्रखर बना देती थीं। वे केवल विचारों से नहीं, बल्कि अपने बलशाली व्यक्तित्व और लौह-संकल्प से भी विरोधियों के मन में भय उत्पन्न कर देते थे। निशानेबाजी में वे अद्वितीय थे—उनकी बंदूक से निकली हर गोली अंग्रेज़ी हुकूमत के दिल में दहशत भर देती थी। अपने साथियों को वे रणकौशल और युद्धनीति का प्रशिक्षण देते, जिससे उनकी टोली अजेय बन गई। उनकी योजनाएँ इतनी कुशल होतीं कि ब्रिटिश सरकार उन्हें पकड़ने के लिए अनेक षड्यंत्र रचती रही, मगर वे हर बार उनकी पकड़ से परे रहे।

1928 में जब लाला लाजपत राय की शहादत ने समूचे देश को क्रोध की ज्वाला में झोंक दिया, तब सांडर्स वध में आज़ाद की भूमिका ब्रिटिश शासन के लिए एक प्रचंड प्रहार थी। यह केवल प्रतिशोध नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध युद्ध का बिगुल था। आज़ाद का संपूर्ण जीवन साहस और रोमांच की पराकाष्ठा था। वे ब्रिटिश पुलिस को चकमा देकर हर शहर, हर गली में क्रांति की मशाल जलाते रहे। उनकी सबसे बड़ी शक्ति थी—अडिग संकल्प और अविचल हौसला। उन्होंने प्रण लिया था कि वे कभी भी जीते-जी अंग्रेज़ों के हाथ नहीं आएंगे— और इस वचन को उन्होंने अपने अंतिम क्षण तक निभाया।

२७ फरवरी 1931—यह दिन भारतीय इतिहास में त्याग, शौर्य और बलिदान की अमरगाथा के रूप में अंकित है। इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क (अब चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क) में जब आज़ाद अपने एक साथी के साथ भविष्य की क्रांतिकारी रणनीति बना रहे थे, तभी किसी विश्वासघाती ने उनके होने की खबर अंग्रेज़ों तक पहुँचा दी। पलक झपकते ही पूरा पार्क अंग्रेज़ी पुलिस से घिर गया, लेकिन आज़ाद डरने वालों में नहीं थे—वे सिंह की भांति गरजे और मोर्चा संभाल लिया। उन्होंने अकेले ही पूरे ब्रिटिश पुलिस बल से लोहा लिया। उनकी पिस्तौल से हर निकली हुई गोली अंग्रेज़ों के हृदय में भय और आतंक भर रही थी। वे तब तक लड़ते रहे, जब तक उनकी पिस्तौल में केवल एक आखिरी गोली शेष नहीं रह गई। लेकिन यह आखिरी गोली उन्होंने अपने लिए बचा रखी थी — जीते - जी गुलामी स्वीकार नहीं करने की उनकी प्रतिज्ञा इसी क्षण पूर्ण हुई। उन्होंने अपनी ही पिस्तौल से स्वयं को गोली मार ली, परंतु आज़ादी का सौदा करने के बजाय वीरगति को चुना। मात्र २४ वर्ष की आयु में यह महायोद्धा शरीर से विदा हो गया, परंतु उसकी क्रांतिकारी चेतना आज भी हर भारतीय के हृदय में अमर है। चन्द्रशेखर आज़ाद ने न केवल अपना नाम सार्थक किया, बल्कि अपनी अंतिम सांस तक स्वतंत्रता का वह उद्घोष किया, जो युगों-युगों तक गूंजता रहेगा—"मैं आज़ाद था, आज़ाद हूँ, और आज़ाद ही रहूँगा!"

चन्द्रशेखर आज़ाद का जीवन केवल एक क्रांतिकारी गाथा नहीं, बल्कि बलिदान, साहस और स्वाभिमान की जीवंत प्रेरणा है। वे हमें यह सिखाते हैं कि सच्ची आज़ादी केवल चाहने से नहीं मिलती, उसके लिए अपार त्याग, अटूट संकल्प और अदम्य साहस आवश्यक होता है। वे सिर्फ एक योद्धा नहीं, बल्कि एक प्रज्वलित विचारधारा थे, जो हर उस हृदय में स्पंदित होती है, जिसमें स्वतंत्रता का स्वप्न और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम बसता है। उनका दृढ़ विश्वास था कि स्वतंत्रता कोई दान में मिलने वाली वस्तु नहीं, बल्कि यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जिसे छीनकर हासिल करना पड़ता है। उनकी पुण्यतिथि हमें यह स्मरण कराती है कि आज जो स्वतंत्रता का प्रकाश हमारे जीवन को आलोकित कर रहा है, वह अनगिनत वीरों के बलिदान की ज्वाला से प्रज्वलित हुआ है। आज़ाद का प्रभाव आज भी युवाओं की रगों में लहू बनकर दौड़ता है। उनकी शौर्यगाथाओं को शब्दों में बाँधने के लिए अनेक पुस्तकें, फिल्में और नाटक रचे गए, लेकिन उनके अद्वितीय साहस को पूरी तरह व्यक्त कर पाना असंभव है। वे हमें सिखाते हैं कि लक्ष्य चाहे कितना ही दुर्गम क्यों न हो, संकल्प की लौ को कभी बुझने नहीं देना चाहिए। उनका स्वप्न था एक स्वतंत्र, सशक्त और समृद्ध भारत—और अब, उस स्वप्न को साकार करना हमारा परम कर्तव्य और राष्ट्रधर्म है। यह केवल इतिहास का एक अध्याय नहीं, बल्कि हर पीढ़ी के लिए एक अमिट प्रेरणा है।

चन्द्रशेखर आज़ाद की पुण्यतिथि केवल एक तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति, साहस और बलिदान का अमर दीप स्तंभ है, जो हर पीढ़ी को कर्तव्य, संकल्प और स्वाभिमान का संदेश देता है। वे भले ही देह से विदा हो चुके हों, परंतु उनकी तेजस्वी आत्मा इस देश की माटी में घुल-मिलकर हर राष्ट्रभक्त के हृदय में जीवंत है। उनके विचार, उनका अदम्य साहस और मातृभूमि के प्रति उनका अटूट प्रेम आज भी हर क्रांतिपथिक को राष्ट्रसेवा की शपथ दिलाता है। उनका बलिदान केवल अतीत की गाथा नहीं, बल्कि वर्तमान की चेतावनी और भविष्य का संकल्प है—कि हम उस स्वतंत्रता को केवल संजोएं ही नहीं, बल्कि उसे और सशक्त करें, जिसे उन्होंने अपने रक्त से सींचकर अमर बनाया। आज इस पुण्य अवसर पर, हमें यह प्रतिज्ञा लेनी होगी कि हम अपने भारत को उस स्वर्णिम शिखर तक पहुँचाएँगे, जिसका स्वप्न आज़ाद ने देखा था। वे केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने जीवन के हर क्षण में "आज़ाद" थे—और मृत्यु के अंतिम पल में भी उन्होंने अपने संकल्प को अक्षुण्ण रखा। उनका यह अमर बलिदान, यह ओजस्वी पुकार, युगों-युगों तक हमें यही प्रेरणा देता रहेगा— "स्वतंत्रता ही जीवन का परम सत्य है, और इसे बनाए रखना ही हमारा परम कर्तव्य!"

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

सांसद महुआ कुंभ से लौटते वक्त दुर्घटना का शिकार , हाथ फैक्चर

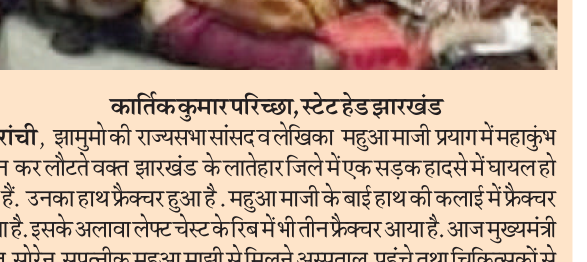

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झामुमो की राज्यसभा सांसद व लेखिका महुआ माजी प्रयाग में महाकुंभ स्नान कर लौटते वक्त झारखंड के लातेहार जिले में एक सड़क हादसे में घायल हो गयी हैं. उनका हाथ फ्रैक्चर हुआ है . महुआ माजी के बाई हाथ की कलाई में फ्रैक्चर आया है. इसके अलावा लेफ्ट चेस्ट के रिब में भी तीन फ्रैक्चर आया है. आज मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सपत्नीक महुआ माझी से मिलने अस्पताल पहुंचे तथा चिकित्सकों से मिलकर उनका जायजा लिया । अस्पताल सुत्रों के अनुसार कलाई में आए फ्रैक्चर को सर्जरी से ठीक किया जाएगा. डॉ ध्रुव पॉल और डॉ निशित कुमार उनका इलाज कर रहे हैं. जबकि उनके साथ साथ पुत्र, बहू और चालक को भी गहरी चोटें आयीं हैं. घटना शिवरात्रि सुबह 4 बजे लातेहार के सतबरवा में घटी है . सांसद महुआ को रांची के ऑर्किड अस्पताल में भर्ती कराया गया है ।60 वर्षित महुआ के साथ उनके 42 वर्षीय पुत्र सोमबीत माजी, उनकी बहू कृति श्रीवास्तव माजी और चालक भूपेंद्र को भी चोटें आयी हैं. सभी को ऑर्किड में भर्ती कराया गया है. जानकारी के मुताबिक वे सभी लोग महाकुंभ स्नान कर वापस रांची वापस लौट रहे थे. इस दौरान लातेहार के सतबरवा में उनकी कार की टक्कर वहां पर पहले खड़े ट्रक से हो गयी. बताया जाता है कि थकान की वजह से चालक या उनके बेटे को झपकी आ गयी जिस कारण ये हादसा हुआ.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023